रबड़ समाचार
बुलेटिन

अक्टूबर 2025 - मार्च 2026

देश के हम सैनिक हैं वीर

हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर !
पर्वत से ऊँचे गौरव में, सागर-से गंभीर,
हम अजेय हैं, सुदृढ, साहसी, हम निर्भय, रणधीर।

प्राण हमारे ज्योति-पुंज हैं, शक्ति-समृद्ध शरीर,
हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर !

जय-पथ पर हम चरण बढ़ाते, बाधाएं कर पार,
घन-गर्जन लज्जित होता, जब हम करते हुंकार।
कभी न पीछे हटे समर में, कभी न सीखी हार,
करता है सम्मान हमारे, पौरुष का संसार।

हमसे रक्षित संस्कृति, भूगिरि, सिंधु, अन्न, नभ, नीर,
हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर !

कष्ट-सहन में भी रखते हम अधरों पर मुसकान,
उसमें दृढ़ संकल्प, स्फूर्ति-पद कंठों में जय-गान।
लक्ष्य-सिद्धि के लिए किए जो प्राणों के बलिदान,
उनसे हमने सदा बढ़ाया भारत का सम्मान।

अनुशासन-रत रहे निरन्तर, हुए न कभी अधीर,
हम सैनिक हैं वीर, देश के हम सैनिक हैं वीर !

जगन्नाथप्रसाद 'मिलिन्द'
(चुने हुए राष्ट्रीय गीत से साभार)

रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
कोट्टयम - 686 002, केरल
पी बी नं.1122
दूरभाष : (0481) 2301231
ई मेल : ol@rubberboard.org.in
वेब साइट : www.rubberboard.org.in

रबड़ समाचार बुलेटिन

अक्टूबर 2025 - मार्च 2026
अंक 139

अध्यक्ष
नितिन कुमार यादव आई ए एस

कार्यकारी निदेशक
एम वसंतगेशन आई आर एस

संपादक
एम श्रीविद्या
सहायक निदेशक (रा भा)

संपादन सहयोग
सिसिली पी एस
हिंदी सहायक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से रबड़ बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

"सपने वो नहीं जो हम सोते हुए देखते हैं,
सपने वो हैं जो हमें सोने नहीं देते।"
-डॉ ए पी जे अब्दुल कलाम

मुख पृष्ठ :
राजभाषा सम्मेलन

अंतिम पृष्ठ का चित्रकार -
निमिल एस
वरिष्ठ रबड़ टैपिंग निदर्शक
प्रा का अड्डूर

इस अंक में

कृत्रिम बुद्धिमत्ता - कृषि क्षेत्र में अनंत संभावनाएँ 4
राजभाषा सम्मेलन 5
राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान का रजत जयंती समारोह 7
राज्य-आधारित नई उर्वरक प्रयोग सिफारिशें 10
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान ने स्थापना दिवस मनाया 13
रबड़ बोर्ड में राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह मनाया गया 15
गर्मियों में अधिक आय अर्जित करने के लिए नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग 16
कर्मक्षेत्र में सजगता के साथ एक और वर्ष... अनुभव और गर्व के साथ (संस्मरण) 19
विश्व शांति (कविता) 21
मीडिया प्रतिनिधियों ने रबड़ बोर्ड का दौरा किया 22
दो मशीन, चार लोग - एक लद्दाख यात्रानुभव 23
कारगिल युद्ध की यादें: एक सैनिक की डायरी से... 26
रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह-समापन समारोह 27
अफ्रीका की छत -किलिमंजारो का उहुरू शिखर (यात्रावृत्त) 28
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में वरिष्ठ अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम 30
संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा दिनांक 04.31.01.2026 से 07.01.2026 तक कुमरकम, कोट्टयम का निरीक्षण दौरा 31
माँ की यादें (कविता) 32
राजभाषा संगोष्ठी 33
वर्दी के साये में - एक फौजी पत्नी (कविता) 34
विश्व हिंदी दिवस का आयोजन 35
कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की गतिविधियां 37
दैनिक उपयोगी हिंदी-अंग्रेजी वाक्यांश 40
आलू पराठा (रसोई घर) 41
हिंदी दिवस समारोह 43

कृत्रिम बुद्धिमत्ता - कृषि क्षेत्र में अनंत संभावनाएँ

आज कृषि क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता नामक तकनीक बहुत प्रासंगिक होती जा रही है। जलवायु परिवर्तन, खेती की लागत में हुई वृद्धि, मजदूरों की कमी, बाजार की अनिश्चितता - ये सभी किसानों के सामने खड़ी चुनौतियाँ हैं। सिर्फ पारंपरिक खेती के तरीकों से इन संकटों का समाधान नहीं निकाला जा सकता। इस परिस्थिति में जलवायु, मिट्टी की प्रकृति, फसल संबंधी जानकारी, बाजार के रुझान आदि का विश्लेषण करके सटीक और समय पर सुझाव देने में कृत्रिम बुद्धिमत्ता सक्षम है। खासकर, लंबी अवधि के आधार पर योजना बनाकर की जाने वाली रबड़ जैसी बागानी फसलों में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित प्रणालियाँ कार्यकुशलता बढ़ाएँगी, अनिश्चितता कम करेंगी और वैज्ञानिक आधार को समर्थन देंगी।

रबड़ क्षेत्र में कृत्रिम बुद्धिमत्ता की संभावनाओं को किसानों के लिए लाभकारी तरीके से कैसे लागू किया जाए, इसकी जाँच रबड़ बोर्ड कर रहा है। इस क्षेत्र में अनेक संभावनाएँ हैं। स्थानीय विशेषताओं और जलवायु के आधार पर रोपण सामग्री की आवश्यकता का पहले से अनुमान लगाने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता उपकरण का उपयोग किया जा सकता है। जलवायु संबंधी जानकारी, मिट्टी की प्रकृति, रोपण से जुड़े पिछले रुझानों आदि का विश्लेषण करके रबड़ की पौधशालाओं में पौधों का उत्पादन व्यवस्थित किया जा सकता है। इससे पौधों का अत्यधिक उत्पादन टाला जा सकेगा और कमी भी नहीं होगी। बीज संग्रह, बडिंग, पौध वितरण आदि सभी को व्यवस्थित करने के लिए ए.आई. तकनीक का इस्तेमाल किया जा सकता है।

इसके अलावा, बोर्ड के डिजिटल प्लेटफॉर्म कॉम्प्रिहेंसिव रबड़ इन्फॉर्मेशन सिस्टम प्लेटफॉर्म (क्रिस्प) में ए.आई. घटक शामिल करने से स्थानीय रूप से उपयुक्त रबड़ की किस्मों के बारे में पूरी जानकारी मिल सकेगी। मिट्टी की प्रकृति, बारिश की मात्रा, रबड़ की किस्मों के परीक्षण परिणाम, रोगों का फैलाव आदि जानकारी के आधार पर सबसे उपयुक्त किस्म चुनने में यह प्रणाली मदद करेगी। खेती वाली जगह के लिए अनुपयुक्त किस्म चुनने से बचा जा सकेगा, जो दीर्घकालिक आधार पर उत्पादकता बढ़ाने में सहायक होगा। रबड़ के पौधों में रोगों, पोषक तत्वों की कमी आदि का पता चित्रों के विश्लेषण के जरिए पहले ही लगाया जा सकेगा। मोबाइल ऐप, व्हाट्सऐप, वेब प्लेटफॉर्म आदि के माध्यम से काम करने वाली ए.आई. चैटबॉट सलाह प्रणाली के जरिए रोपण, उर्वरक प्रयोग, रोग-कीट नियंत्रण आदि विषयों पर किसानों को व्यक्तिगत सुझाव उपलब्ध कराए जा सकेंगे। ड्रोन के इस्तेमाल से किए गए सर्वेक्षण के जरिए रोगों के फैलाव का निर्धारण करके जरूरत के अनुसार ही फफूंदनाशकों का उपयोग भी व्यावहारिक बनाया जा सकता है।

किसानों को समय पर खेती के काम करने और खेती को वैज्ञानिक बनाने के लिए जरूरी सुझाव उपलब्ध कराने में मदद करने वाली यह तकनीक रबड़ क्षेत्र को आगे ले जाने में निश्चित रूप से सहायक होगी।

शुभकामनाओं के साथ,

एम वसंतगेशन आई आर एस
कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड

राजभाषा सम्मेलन

भारत सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से रबड़ बोर्ड ने कोट्टयम स्थित भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में राजभाषा सम्मेलन 2025-2026 का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत श्रीमती जयश्री सी. ई. द्वारा प्रार्थना गीत के साथ हुई। कार्यक्रम का उद्घाटन श्री चेतन कुमार मीना, आईएएस, कोट्टयम जिलाधीश ने किया, जो मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, श्री चेतन कुमार मीना, आईएएस ने कहा कि हिंदी को केवल राजभाषा के रूप में ही नहीं, बल्कि व्यावहारिक और कार्यसाधक उपयोग के लिए भी सीखना चाहिए। भारत भाषाओं और संस्कृतियों से समृद्ध देश है और प्रत्येक भाषा अपने भीतर गहरे सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को समेटे हुए है। इसलिए सभी भाषाओं के प्रति सम्मान और उदार दृष्टि कोण होना चाहिए। इसी भावना के अंतर्गत सरकार की त्रिभाषा सूत्र नीति बहुभाषिक अध्ययन को प्रोत्साहित करती है, जिससे राष्ट्रीय एकता को सुदृढ किकया जा सके।

कार्यक्रम की अध्यक्षता, श्री वसंतगेशन, आईआरएस, कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने की। डॉ. सिजु टी., रबड़ उत्पादन आयुक्त और श्री ई.ए.मात्यु, उप निदेशक (बा.आ.) ने इस अवसर पर आशीर्वचन दिए। डॉ. देबब्रता राय, निदेशक (अनुसंधान) ने स्वागत भाषण दिया और श्रीमती एम. श्रीविद्या, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया।

हर वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस के अवसर पर रबड़ बोर्ड मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के पदधारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती है। कार्यक्रम के दौरान, हिंदी

दिवस 2025 के अवसर पर आयोजित हिंदी पखवाड़ा समारोह के अंतर्गत विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को श्री वसंतगेशन, आईआरएस, कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने पुरस्कार वितरित किया। सम्मेलन में कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देने के महत्व पर बल दिया गया और अधिकारियों एवं कर्मचारियों को राजभाषा नीति के कार्यान्वयन को और अधिक सुदृढ़ करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।

राजभाषा ट्रॉफियों का वितरण -

हिंदी को राजभाषा के रूप में लागू करने में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले रबड़ बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों को हर वर्ष राजभाषा ट्रॉफी प्रदान की जाती है। वर्ष 2025 के दौरान, प्रथम स्थान-रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय, तृश्शूर को प्राप्त हुआ और श्रीमती कमलाक्षी के.के.,उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने मुख्य अतिथि के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण किया। द्वितीय स्थान-रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय, पालक्काड को प्राप्त हुआ और श्री मोहनदास के.वी, कनिष्ठ सहायक ग्रेड-1 ने मुख्य अतिथि के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण किया। तृतीय स्थान-रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय, मंजेरी को प्राप्त हुआ और श्री अशोक पी, विकास अधिकारी ने मुख्य अतिथि के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण किया। चतुर्थ स्थान-रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय, मंगलूरु को प्राप्त हुआ और श्रीमती होजिरा मंगला सबप्पा, अनुभाग अधिकारी ने मुख्य अतिथि के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण किया। पंचम स्थान-रबड़ बोर्ड प्रादेशिक कार्यालय, काजंगाड को प्राप्त हुआ और श्रीमती षैनी रेजी, सहायक विकास अधिकारी ने मुख्य अतिथि के करकमलों से पुरस्कार ग्रहण किया।

राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान का रजत जयंती समारोह

राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के रजत जयंती समारोह का उद्घाटन कोट्टयम के पुतुप्पल्ली स्थित भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के हीविया हॉल में माननीय केंद्रीय अल्पसंख्यक कार्य, मत्स्यपालन, पशुपालन एवं डेयरी विकास राज्य मंत्री जॉर्ज कुर्यन द्वारा किया गया। रजत जयंती स्मारक के रूप में राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में स्थापित शिल्प का भी उन्होंने अनावरण किया।

मंत्री ने कहा कि देश में प्राकृतिक रबड़ का क्षेत्रफल और उत्पादन दोनों बढ़ रहे हैं। उन्होंने बताया कि रबड़ कप लंप के आयात को नियंत्रित करने के लिए सरकार द्वारा उठाए गए कदम किसानों के लिए लाभकारी सिद्ध हुए हैं। उन्होंने यह भी जानकारी दी कि यूरोपीय संघ के वन विनाश नियंत्रण नियमों का पालन करने तथा उसके माध्यम से रबड़ उत्पादों के निर्यात को सुगम बनाने के लिए घरेलू स्तर पर उत्पादित रबड़ की ट्रेसेबिलिटी सुनिश्चित करने के कदम भी उठाए जा रहे हैं।

मंत्री ने जोर देकर कहा कि केरल प्राकृतिक रबड़ का प्रमुख उत्पादक राज्य होने के बावजूद रबड़ आधारित उद्योगों के विकास में पिछड़ा हुआ है, और राज्य में ऐसे और अधिक उद्योग स्थापित करने की आवश्यकता है।

बैठक की अध्यक्षता कर रहे चांडी उम्मन विधायक ने कहा कि कृषि देश की अर्थव्यवस्था का मुख्य घटक है और आज यह संकटों का सामना कर रही है। उन्होंने यह भी जोड़ा कि युवाओं का बड़ी संख्या में विदेश जाना रबड़ की खेती को प्रभावित कर रहा है।

सभा का स्वागत करते हुए रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आई.आर.एस. ने राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान की उपलब्धियों की ओर ध्यान आकर्षित किया और बताया कि संस्थान रबड़ उद्योग के प्रारंभिक और परवर्ती दोनों क्षेत्रों की जरूरतों को समान रूप से पूरा करने पर

आगे भी ध्यान केंद्रित करता रहेगा।

वर्ष 2000 में स्थापित रबड़ प्रशिक्षण केंद्र को बाद में वर्ष 2010 में रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के पद पर उन्नत किया गया। यह प्रशिक्षण कार्यक्रमों के विस्तार और प्रभाव में हुई प्रगति को दर्शाता है। वर्ष 2021 में केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय ने संस्थान को राष्ट्रीय दर्जा दिया और इसका पुनर्नामकरण राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के रूप में किया।

आई.एस.ओ. 9001:2015 प्रमाणित संस्थान राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान आज कृषि, प्रसंस्करण, उत्पाद विनिर्माण सहित संपूर्ण रबड़ मूल्य श्रृंखला में मानव संसाधन विकास और कौशल विकास के लिए नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है। किसानों, उद्यमियों, विश्वविद्यालयों और अन्य शैक्षणिक संस्थानों के छात्रों सहित विभिन्न वर्गों के लोगों को प्रशिक्षण देने के लिए संस्थान प्रति वर्ष 70 से अधिक प्रशिक्षण मॉड्यूल आयोजित करता है। रबड़ क्षेत्र को कुशल मानव संसाधन उपलब्ध कराने हेतु राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान रबड़ प्लांटेशन मैनेजमेंट में एक स्नातकोत्तर डिप्लोमा कोर्स और रबड़ उत्पाद निर्माण में एक प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम भी चलाता है। वर्ष 2024-25 के दौरान, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित 263 प्रशिक्षण कार्यक्रमों से 8150 लोग लाभान्वित हुए।

अपने कार्यक्षेत्र को और अधिक व्यापक बनाने के तहत राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान ने त्रिपुरा की अगरतला में एक नोडल केंद्र और एक परीक्षण सह प्रशिक्षण सुविधा स्थापित की है। असम के गुवाहाटी और नगालैंड के रूज़ाफेमा में भी नए नोडल केंद्र स्थापित किए जा रहे हैं। प्रधानमंत्री कौशल विकास योजना जैसी योजनाओं का लाभ उठाकर संस्थान आदिवासी किसानों, बेरोजगार युवाओं, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति वर्ग के लोगों और महिला लाभार्थियों के लिए समग्र कौशल विकास पहल भी कार्यान्वित कर रहा है।

डॉ. सिजु टी. (रबड़ उत्पादन आयुक्त), डॉ. देबब्रत राय (निदेशक, भा.र.अ.सं.), प्रो. शैलजा जी.एस. (विभागाध्यक्ष, पी.एस.आर.टी., कुसैट), हेकाथो एन. (अपर निदेशक, डी.एल.आर., नगालैंड), प्रिया वर्मा एच. (निदेशक, र.र.प्र.सं.) ने भी सभा को संबोधित किया।

उद्घाटन समारोह में राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. कुरुविला जैकब, सुधा पी. तथा प्रभारी निदेशक रहे डॉ. सिबी वर्गीस, पी. अरुमुगम को सम्मानित किया गया। इसके अलावा रजत जयंती स्मारक के रूप में राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में स्थापित शिल्प की परिकल्पना एवं निर्माण करने वाले फ्रांसिस आन्टणी तथा रजत जयंती लोगो डिज़ाइन करने वाले सुजित नटराजन को भी समारोह में सम्मानित किया गया।

समारोह के दौरान राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान से विभिन्न पाठ्यक्रम पूरे करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया, 'रबड़' मासिका की हीरक जयंती समारोह के तहत आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए गए, रजत जयंती स्मारिका का प्रकाशन, रबड़ क्षेत्र से जुड़े लोगों के लिए रबड़ बोर्ड द्वारा निर्मित ट्यूटोरियल वीडियो का विमोचन, रजत जयंती लोगो का प्रकाशन, तथा रबड़ बोर्ड और नगालैंड सरकार के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर भी किए गए।

उद्घाटन सभा के बाद राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में एक पैनल चर्चा और प्रदर्शनी आयोजित की गई। प्रदर्शनी में रबड़ बोर्ड के प्रचार एवं जनसंपर्क विभाग, भा.र.अ.संस्थान, केंद्रीय गुणता नियंत्रण प्रयोगशाला, रबड़ उत्पादन विभाग और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान जैसे विभागों के स्टॉल भी शामिल थे।

पुस्तक प्रकाशन

रजत जयंती समारोह के तहत राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में प्राकृतिक रबड़ पर आधारित इंजीनियरी तकनीकों को विषय बनाकर तैयार की गई 'बेसिक्स ऑफ इंजीनियरिंग

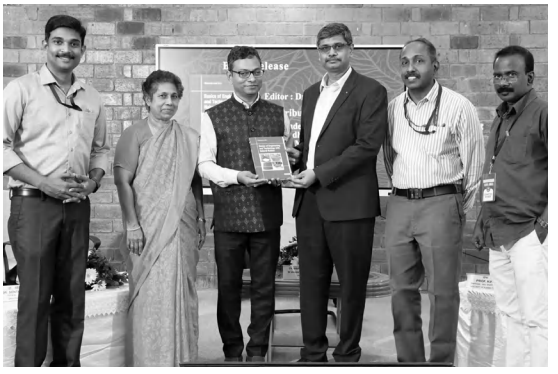

एंड टेक्नोलॉजी विथ नेचुरल रबड़' नामक पुस्तक का विमोचन किया गया। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के रबड़ प्रौद्योगिकी केंद्र के प्रमुख प्रो. किंसुक नस्कर ने रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आई.आर.एस. को पहली प्रति भेंट करके पुस्तक का प्रकाशन किया।

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान की पूर्व संयुक्त निदेशक (रबड़ प्रौद्योगिकी) डॉ. रोज़म्मा अलेक्स पुस्तक की संपादक हैं, और प्रदीप कुमार पी. जॉय, डॉ. शशिधरन के.के., के.एन. मधुसूदनन, डॉ. बेबी कुरियाकोस, उमाशंकर जी. सह-लेखक हैं।

समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

रजत जयंती समारोह के तहत राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित कार्यक्रम में पालक्काड एन.एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज और रबड़ बोर्ड के बीच समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। इसका उद्देश्य रबड़ प्रौद्योगिकी, पॉलिमर साइंस, कौशल विकास और व्यावहारिक अनुसंधान जैसे क्षेत्रों में सहयोग को मजबूत करना है। रबड़ बोर्ड की ओर से कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आई.आर.एस. और एन.एस.एस. इंजीनियरिंग कॉलेज की ओर से प्रो. डॉ. सुजित ने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। समारोह में एन.एस.एस. कॉलेज की डॉ. श्रीलक्ष्मी पिल्लै और रबड़ बोर्ड के अधिकारी भी उपस्थित थे।

पैनल चर्चाः रबड़ उद्योग का सशक्तिकरण

रजत जयंती समारोह के अंतर्गत, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में 'रबड़ उद्योग को सशक्त बनानाः कौशल विकास, प्रौद्योगिकी और भविष्य के लिए सतत विकास' विषय पर एक पैनल च-र्चा का आयोजन किया गया। चर्चा का संचालन रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आईआरएस ने किया। विभिन्न क्षेत्रों के विशेषज्ञों ने इस चर्चा में भाग लिया।

डॉ. एस. सेंथिल विनायकम, निदेशक, आईआईपीएम, बेंगलुरु ने बागान क्षेत्र में उद्यमिता और इस क्षेत्र में क्षमता निर्माण के महत्व के बारे में बात की। प्रो. किंसुक नस्कर, प्रमुख, रबड़ प्रौद्योगिकी केंद्र, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान ने अत्याधुनिक इलास्टोमर्स, हरित टायर प्रौद्योगिकी और टिकाऊ सामग्रियों के बारे में बताया। प्रो. टी. के. मनोज कुमार, प्रोफेसर, डिजिटल यूनिवर्सिटी, केरल ने कौशल विकास में डिजिटल प्रौद्योगिकी की भूमिका पर प्रकाश डाला। डॉ. एम. सेंथिल कुमार, प्रोफेसर, तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय, कोयंबत्तोर ने आधुनिक संचार प्रणालियों के माध्यम से युवाओं और पेशेवरों को कृषि ज्ञान प्रदान करने के तरीकों के बारे में बताया।

पैनल के सदस्यों ने नई तकनीकों के अनुरूप नौकरी संबंधी कौशल विकसित करने पर विस्तृत चर्चा की और प्रतिभागियों के संदेहों के उत्तर दिए।

राज्य-आधारित नई उर्वरक प्रयोग सिफारिशें

डॉ. फेबे जोसेफ
वैज्ञानिक सी
भा र अ संस्थान

डॉ. जेसी एम.डी.
निदेशक अनुसंधान
(सेवानिवृत)

किसी राज्य की मृदा तथा फसलों की विशिष्ट परिस्थितियों के अनुरूप तैयार किए गए उर्वरक प्रयोग दिशानिर्देशों को राज्य-आधारित उर्वरक सिफारिशें कहा जाता है। अन्य सभी फसलों की भाँति रबड़ की खेती में भी वृक्षों की स्वस्थ वृद्धि तथा बेहतर उत्पादकता सुनिश्चित करने के लिए सटीक उर्वरक प्रयोग अत्यंत आवश्यक है। पौधों को आवश्यक पोषक तत्व संतुलित अवस्था प्रनाए रखते हुए उपलब्ध कराए जाने चाहिए। इसके लिए मृदा से नष्ट होने वाले पोषक तत्वों को पुनः मृदा में लौटाने तथा उन्हें बनाए रखने में उर्वरकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है।

अतः मृदा में विद्यमान पोषक तत्वों की उपलब्धता, फसलों की पोषण आवश्यकताओं तथा अधिकतम उपज प्राप्त करने के उद्देश्य से राज्य-आधारित विशिष्ट उर्वरक प्रयोग सिफारिशों का विकास किया जाना अनिवार्य है।

विशिष्ट उर्वरक प्रयोग सिफारिशों का महत्व

विशिष्ट उर्वरक प्रयोग सिफारिशों के माध्यम से फसलों को सही मात्रा में, सही समय पर तथा सही प्रकार के पोषक तत्व उपलब्ध कराए जाते हैं, जिससे पोषक तत्वों के उपयोग की दक्षता में वृद्धि होती है। इससे मृदा अपरदन, बाष्पीकरण अथवा बहाव के कारण होने वाले पोषक तत्वों के नुकसान को कम किया जा सकता है। मृदा की वास्तविक आवश्यकता के अनुसार ही उर्वरक देने से उर्वरकों तथा धन की अनावश्यक बर्बादी कम होती है और अनावश्यक उर्वरक प्रयोग से बचा जा सकता है। इससे न केवल उर्वरक लागत कम होती है, बल्कि फसलों की रोग-प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ती है। अवैज्ञानिक उर्वरक प्रयोग से मृदा की अम्लता, जैविक पदार्थों की मात्रा तथा सूक्ष्मजीवों की उपस्थिति प्रभावित होती है, जबकि उचित उर्वरक प्रयोग मृदा के स्वास्थ्य और संरचना को बनाए रखने में सहायक होता है। संतुलित पोषण मिलने पर फसलों की वृद्धि स्वस्थ होती है और उपज में वृद्धि होती है। इसके अतिरिक्त, सटीक उर्वरक प्रयोग भू-जल प्रदूषण, जलाशयों में यूट्रोफिकेशन तथा हरितगृह गैसों के उत्सर्जन की संभावना को कम करता है। मृदा और क्षेत्र के अनुरूप उर्वरक प्रयोग करने से पर्यावरण-अनुकूल कृषि को बढ़ावा दिया जा सकता है।

रबड़ में राज्य-विशिष्ट सिफारिशों की आवश्यकता

रबड़ की खेती प्रारंभिक रूप से प्राकृतिक वनों को साफ कर पोषक तत्वों से भरपूर भूमि पर की जाती थी, इसलिए उस समय रबड़ की पोषण आवश्यकता सामान्यतः कम थी। तथापि, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में विभिन्न समयावधियों में किए गए प्रयोगों से प्राप्त ज्ञान के आधार पर क्षेत्र-विशिष्ट खेती तथा उर्वरक प्रयोग सिफारिशें प्रदान की जाती रही हैं। कृषिक्रियाएँ भी उस क्षेत्र की मृदा और जलवायु पर निर्भर करती हैं। रबड़ वृक्षों की वृद्धि के प्रत्येक चरण के लिए अलग-अलग उर्वरक प्रयोग सिफारिशें दी जाती हैं। भारत के पारंपरिक रबड़ क्षेत्रों तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों में रबड़ के अपरिपक्व चरण (एक से चार

वर्ष) तथा पाँचवें वर्ष से आगे के लिए अलग-अलग सिफारिशें उपलब्ध हैं (तालिका 1 एवं 2)।

तालिका 1- एक से चार वर्ष आयु के पौधों के लिए सामान्य उर्वरक प्रयोग सिफारिशें (पारंपरिक क्षेत्र -केरल, तमिलनाडु का कन्याकुमारी, कर्नाटक के दक्षिण कन्नड़ व कोडगु जिले, आंध्र प्रदेश, ओडिशा)।

पौधों की आयु	उर्वरक में सम्मिलित तत्वों की मात्रा (ग्राम/पौधा/वर्ष)			
	नाइट्रोजन (N)	फॉस्फोरस (P2O5)	पोटाश (K2O)	मैग्नीशियम (MgO)
प्रथम वर्ष	45	45	18	6.75
द्वितीय वर्ष	90	90	36	13.5
तृतीय वर्ष	110	110	44	16.5
चतुर्थ वर्ष	90	90	36	13.5

पौधों की आयु के अनुसार अनुशंसित पोषक तत्वों को उनके अनुपात के अनुसार सीधे उर्वरकों अथवा मिश्रित उर्वरकों के माध्यम से पौधों को उपलब्ध कराना चाहिए।

* जिन बागानों में अंतराफसल या लोबिया नहीं होती, वहाँ तृतीय वर्ष की उर्वरक सिफारिश को ही चतुर्थ वर्ष में भी दोहराया जा सकता है।
* केरल के तिरुवनंतपुरम, कोल्लम, आलप्पुषा, पत्तनंतिट्टा, इडुक्की तथा एरणाकुलम जिलों की मृदा में मैग्नीशियम उर्वरक दिया जा सकता है। त्रिशूर से उत्तर की ओर के जिलों में मृदा में मैग्नीशियम की मात्रा सामान्यतः अधिक होती है, इसलिए वहाँ इसकी आवश्यकता नहीं होती। तथापि, यदि इन जिलों में कहीं मैग्नीशियम की कमी पाई जाए, तो वहाँ भी इसे दिया जा सकता है।

तालिका - 2 एक से चार वर्ष आयु के पौधों के लिए सामान्य उर्वरक प्रयोग सिफारिशें - (पूर्वोत्तर क्षेत्र - अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, मणिपुर, मिजोरम)

पौधों की आयु	उर्वरक में सम्मिलित तत्वों की मात्रा (ग्राम/पौधा/वर्ष)		
	नाइट्रोजन (N)	फॉस्फोरस (P2O5)	पोटाश (K2O)
प्रथम वर्ष	60	60	30
द्वितीय वर्ष	120	120	60
तृतीय वर्ष	146	146	73
चतुर्थ वर्ष।	117	117	58

पौधों की आयु के अनुसार अनुशंसित पोषक तत्वों को उनके अनुपात के अनुसार सीधे या मिश्रित उर्वरकों के माध्यम से उपलब्ध कराना चाहिए।

* जिन बागानों में अंतरफसल या लोबिया नहीं होती, वहाँ तृतीय वर्ष की उर्वरक सिफारिश को ही चतुर्थ वर्ष में भी अपनाया जा सकता है।

वर्ष 2012-2020 की अवधि के दौरान रबड़ अनुसंधान संस्थान ने राष्ट्रीय मृदा सर्वेक्षण एवं भूमि उपयोग नियोजन ब्यूरो (NBSS & LUP), भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) के सहयोग से एक व्यापक अध्ययन कार्यक्रम संचालित किया। इसके अंतर्गत देश के सभी रबड़-उत्पादक क्षेत्रों से मृदा नमूने एकत्र किए गए (प्रत्येक 50 हेक्टेयर रबड़ क्षेत्र से एक संयुक्त मृदा नमूना)। मृदा की रासायनिक जाँच कर पोषक तत्वों की मात्रा का आकलन किया गया तथा उर्वरता का मूल्यांकन किया गया। मृदा नमूने लिए गए बागानों के अक्षांश-देशांतर जीपीएस उपकरणों द्वारा दर्ज किए गए। जीआईएस तकनीक का उपयोग कर विभिन्न मृदा उर्वरता मानचित्र तैयार किए गए।

अध्ययन में प्राथमिक एवं द्वितीयक पोषक तत्वों तथा मृदा पी एच में पारंपरिक क्षेत्रों और पूर्वोत्तर क्षेत्रों में व्यापक क्षेत्रीय भिन्नता पाई गई। परिणामों से यह स्पष्ट हुआ कि कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, ओडिशा, मिजोरम तथा मणिपुर जैसे राज्यों में टापिंग किए जा रहे बागानों की मृदा में पोषक तत्वों की मात्रा में बड़ा अंतर है, जिससे वहाँ दी जा रही सामान्य सिफारिशों की अपर्याप्तता स्पष्ट होती है।

अतः इन राज्यों की पोषण आवश्यकताओं को पूरा करने तथा मृदा उर्वरता, जलवायु और कृषिपद्धतियों के आधार पर रबड़ वृक्षों को उपयुक्त पोषक तत्व उपलब्ध कराने के उद्देश्य से राज्य-आधारित विशेष उर्वरक सिफारिशें तैयार की गई हैं (तालिका 3)।

तालिका 3 राज्य-आधारित उर्वरक प्रयोग सिफारिशें (पाँचवें वर्ष से अधिक आयु के रबड़ वृक्षों एवं टापिंग किए जा रहे वृक्षों के लिए)।

राज्य	उर्वरक में सम्मिलित तत्व (किलोग्राम/ हेक्टेयर/वर्ष)			बॉरॉन / जिंक पाँच वर्ष से अधिक आयु वाले वृक्षों के लिए उनकी अवधि के दौरान केवल एक बार
	नाइट्रोजन (N)	फॉस्फोरस (P2O5)	पोटाश (K2O)	
केरल, तमिलनाडु, (कन्याकुमारी)	30	20	30	बॉरॉक्स - 10 कि. ग्रा./हेक्टेयर, जिंक सल्फेट - 25 कि. ग्रा./ हेक्टेयर
कर्नाटक	30	30	30	बॉरॉक्स - 10 कि. ग्रा./हेक्टेयर, जिंक सल्फेट - 25 कि. ग्रा./ हेक्टेयर
आंध्र प्रदेश	30	30	30	बॉरॉक्स - 10 कि. ग्रा./हेक्टेयर, जिंक सल्फेट - 25 कि. ग्रा./ हेक्टेयर
ओडिशा	30	30	30	बॉरॉक्स - 10 कि. ग्रा./हेक्टेयर, जिंक सल्फेट - 25 कि. ग्रा./ हेक्टेयर
पूर्वोत्तर क्षेत्र (मणिपुर)(अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, मणिपुर)	30	30	25	बॉरॉक्स - 10 कि. ग्रा./हेक्टेयर जिंक सल्फेट - 25 कि.ग्रा./ हेक्टेयर
मिज़ोरम	35	35	35	बॉरॉक्स - 10 कि. ग्रा./हेक्टेयर,

अनुशंसित पोषक तत्वों को उनके अनुपात के अनुसार सीधे या मिश्रित उर्वरकों के माध्यम से वृक्षों को उपलब्ध कराना चाहिए।

केरल, तमिलनाडु (कन्याकुमारी) तथा पूर्वोत्तर क्षेत्रों में मृदा परीक्षण के बाद मृदा में बॉरॉन और जिंक की कमी अधिक पाई जाती है तो बॉरॉन एवं जिंक दिया जाना चाहिए।

कर्नाटक, आंध्र प्रदेश तथा ओडिशा में मृदा में बॉरॉन और जिंक की कमी अधिक पाई जाती है, इसलिए इनका प्रयोग अनिवार्य है। मिजोरम की मृदा में बॉरॉन की कमी अत्यधिक होने के कारण वहाँ बॉरॉक्स का प्रयोग अनिवार्य है।

सही उर्वरक, सही मात्रा में और सही समय पर प्रयोग करना ही उत्पादकता तथा पर्यावरण संरक्षण सुनिश्चित करने का सर्वोत्तम उपाय है। अतः कृषकों को वैज्ञानिक उर्वरक प्रयोग की जानकारी प्राप्त कर उसे व्यवहार में लाना चाहिए। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में रबड़ खेती की विशिष्ट चुनौतियों और आवश्यकताओं का समाधान करने तथा रासायनिक उर्वरकों के अधिकतम एवं दक्ष उपयोग को सुनिश्चित करने में राज्य-आधारित सिफारिशें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान ने स्थापना दिवस मनाया

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के 70वें स्थापना दिवस समारोह में केरल विश्वविद्यालय के बायोइनफॉर्मेटिक्स विभाग के पूर्व डीन और सेंटर फॉर डेवलपमेंट ऑफ इमेजिंग टेक्नोलॉजी के पूर्व निदेशक प्रोफेसर (डॉ.) अच्युतशंकर ने स्थापना दिवस व्याख्यान दिया। कोट्टयम में अनुसंधान संस्थान में आयोजित समारोह में, 'ह्यूमनॉयड रोबोट्स' विषय पर दिए गए व्याख्यान में उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी और विज्ञान ने आज के जीवन के प्रत्येक चरण में योगदान दिया है और निरंतर सटीकता के साथ अनेक कार्य करने में सक्षम ह्यूमनॉयड रोबोट मनुष्य के दैनिक जीवन में निर्णायक भूमिका निभा सकते हैं।

रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक श्री एम. वसंतगेशन आई.आर.एस. ने अपने प्रस्तावना भाषण में कहा कि भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के गठन का उद्देश्य आज भी प्रासंगिक बने हुए हैं और अनुसंधान संस्थान को जलवायु परिवर्तन से जुडी नई चुनौतियों को स्वीकार करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

सम्मेलन में स्वागत भाषण देते हुए अनुसंधान संस्थान के निदेशक डॉ. देबब्रत राय ने भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान की वर्तमान गतिविधियों के बारे में जानकारी दी और अनुसंधान संस्थान के विकास में योगदान देने वाले सभी लोगों को स्मरण किया। डॉ. सिजु टी. (रबड़ उत्पादन आयुक्त), एच. प्रिया वर्मा (निदेशक, प्रशिक्षण), डॉ. जेसी एम.डी. (पूर्व प्रभारी निदेशक, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान), डॉ. सिबी वर्गीस (पूर्व प्रभारी निदेशक, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान) ने समारोह में संबोधित किया। डॉ. षेरा मात्यु (प्रभारी अधिकारी, तकनीकी परामर्श प्रभाग, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान) ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

भारतीय रबड़ अनुसंधान केंद्र से सेवानिवृत्त अधिकारी, रबड़ बोर्ड के विभागाध्यक्ष तथा आस-पास के स्कूलों के विद्यार्थी भी समारोह में उपस्थित रहे। डॉ. अच्युतशंकर ने विद्यार्थियों और बैठक में उपस्थित लोगों के साथ संवाद किया।

कोट्टयम मेडिकल कॉलेज को सफाई उपकरण सौंपे गए

केंद्र सरकार की 'स्वच्छता कार्य योजना' के तहत रबड़ बोर्ड ने कोट्टयम मेडिकल कॉलेज को 10 लाख रुपये कीमत की स्क्रबर ड्रायर फर्श की सफाई करने वाली मशीन और वैक्यूम क्लीनर प्रदान किए।

केरल सरकार के सहकारिता, बंदरगाह और देवस्वम विभाग के मंत्री वी.एन. वासवन की अध्यक्षता में कोट्टयम मेडिकल कॉलेज में आयोजित बैठक में रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेसन आईआरएस ने सफाई उपकरण मेडिकल कॉलेज को सौंप दिए। बैठक में मेडिकल कॉलेज के सफाई कर्मचारियों को सम्मानित भी किया गया। मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. वर्गीस पुन्नूस, अधीक्षक डॉ. टी. के.जयकुमार, रबड़ बोर्ड के प्रभारी सचिव डॉ. बिनॉय के. कुर्यन ने भी संबोधित किया।

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के लिए नए निदेशक

भारतीय रबड़ अनुसंधान केंद्र के निदेशक के रूप में डॉ. देबब्रत राय ने कार्यभार संभाला। वे वर्ष 2000 में अगरतला स्थित प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन में पौधा शरीरक्रिया विज्ञान विभाग में एक कनिष्ठ वैज्ञानिक के रूप में रबड़ बोर्ड की सेवा में शामिल हुए। देबब्रत राय वैज्ञानिक सी ग्रेड में थे। नया कार्यभार तब आया जब वे प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन, अगरतला और धेंकनाल के प्रभारी अधिकारी के रूप में काम कर रहे थे। वह अंतर्राष्ट्रीय रबड़ अनुसंधान और विकास बोर्ड के गैर-पारंपरिक रबड़ खेती क्षेत्रों के लिए एक विशेषज्ञ समूह के लिए संपर्क अधिकारी के रूप में भी कार्य करते हैं। रबड़ अनुसंधान में एक लंबे अनुभव के साथ, उन्होंने भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के प्रमुख के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

उन्होंने कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बेंगलुरु से कृषि में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है। देबब्रत राय ने आई. आई. टी. खड़गपुर से डॉक्टरेट की उपाधि भी प्राप्त की। वे अगरतला के मूल निवासी हैं। उनकी पत्नी शर्मिष्ठा डे है और उनका पुत्र है आर्किस्मान राय।

रबड़ बोर्ड के प्रशिक्षण केंद्र, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक के रूप में श्रीमती एच. प्रिया वर्मा ने कार्यभार ग्रहण किया। प्रिया वर्मा को रबड़ बोर्ड के रबड़ उत्पादन विभाग में विकास अधिकारी के रूप में सत्ताईस वर्षों का कार्य अनुभव है और उन्होंने केरल कृषि विश्वविद्यालय से कृषि विज्ञान में स्नातक की डिग्री और कृषि विस्तार में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की है। राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान का उद्देश्य रबड़ मूल्य श्रृंखला के सभी क्षेत्रों में कौशल अंतर को दूर करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम और मानव संसाधन विकास करना है।

तिरुवनंतपुरम की मूल निवासी प्रिया वर्मा के पति मोहन कुमार (निदेशक, एमएस एग्रोटेक, बैंगलोर) हैं और उनके दो बच्चे हैं, श्रीनिधि और सुपर्णा।

रबड़ बोर्ड में राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह मनाया गया

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान के पुस्तकालय एवं प्रलेखन केंद्र में पुस्तकालय सप्ताह समारोह का उद्घाटन रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक श्री एम. वसंतगेशन, आईआरएस ने किया। राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह 17 से 20 नवंबर तक मनाया गया। इन दिनों पुस्तकालय आम जनता के लिए खुला रहा।

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में वर्ष 1963 में स्थापित इस पुस्तकालय में शिक्षा और विज्ञान से संबंधित पुस्तकों का विशाल संग्रह है। साथ ही पत्रिकाओं के पुराने अंक, शोध पत्र और प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए आवश्यक संदर्भ पुस्तकें भी उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय पुस्तकालय सप्ताह समारोह के अंतर्गत पुस्तक विमोचन, मातृभूमि बुक्स और डी.सी. बुक्स द्वारा आयोजित पुस्तक मेला, व्याख्यान और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

रबड़ बोर्ड के पूर्व कार्यकारी निदेशक डॉ. के. एन. राघवन आई आर एस पुस्तकालय सप्ताह समारोह के समापन समारोह में मुख्य अतिथि थे। उन्होंने कहा कि अक्षर ही संस्कृति और जीवन को बनाए रखते हैं और आगे बढ़ाते हैं, इसलिए हमें वाचन को अपने जीवन का अभिन्न अंग बनाना चाहिए। उन्होंने पुस्तकालय सप्ताह समारोह के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार भी वितरित किए।

डॉ. देबब्रत राय (निदेशक, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान), डॉ. सिजु टी. (रबड़ उत्पादन आयुक्त), एच. प्रिया वर्मा (निदेशक, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान), डॉ. आर.जी. कला (प्रभारी अधिकारी, जैव प्रौद्योगिकी और जीनोम विश्लेषण, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान), लता एन. (प्रलेखन अधिकारी, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान) और पुस्तकालय समिति के सदस्य डॉ. टी. मीना कुमारी और डॉ. के.के. अंबिली ने भी समारोह को संबोधित किया।

गर्मियों में अधिक आय अर्जित करने के लिए नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग

स्लीबा वी पॉल
प्रक्षेत्र अधिकारी

केरल में अधिकांश रबड़ किसान रोपण से लेकर टापिंग तक रबड़ के पेड़ों की वैज्ञानिक देखभाल पर ध्यान देते हैं। हालांकि, कई किसान वैज्ञानिक टापिंग विधियों का सही उपयोग करके लंबे समय तक अधिकतम लाभ प्राप्त करने पर ज्यादा ध्यान नहीं देते। यदि किसान ये वैज्ञानिक विधियाँ अपनाएँ, तो वे रबड़ के पेड़ों की वृद्धि और स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचाए बिना लंबे समय तक उनसे लाभ कमा सकते हैं।

नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग एक ऐसी विधि है जिससे रबड़ के पेड़ों की उत्पादक अवधि बढ़ जाती है और पुराने पेड़ों से भी अपेक्षाकृत अधिक उपज प्राप्त करने में मदद मिलती है। हालांकि, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि यह 'हानिकारक टापिंग' नहीं है। अधिकांश किसान पेड़ के मूल 'ए' और 'बी' पैनलों को टाप करते हैं और फिर नए 'सी' और 'डी' पैनलों को टाप करते हैं। इसके बाद, दो या तीन साल तक 'हानिकारक टापिंग' या 'स्लॉटर टापिंग' करने के बाद पेड़ों को काट दिया जाता है। नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग विधि में इसके बजाय, पेड़ों से लंबे समय तक वैज्ञानिक तरीके से टापिंग जारी रखी जाती है। टापिंग विधि को कुशलतापूर्वक संशोधित करके रबड़ बोर्ड की नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग विधि विकसित की गई है।

रबड़ के पेड़ों से आमतौर पर जड़ से 125 सेंटी मीटर की ऊँचाई पर टापिंग शुरू की जाती है। मूल पैनल 'ए' और 'बी' पर टापिंग पूरी होने के बाद, नए पैनल 'सी' पर एक या दो साल तक टापिंग की जाती है। इसके बाद मूल पैनल पर 125 सेंटीमीटर से ऊपर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग शुरू की जाती है। नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग विधि से सामान्य टापिंग की तुलना में अधिक उत्पादन प्राप्त होता है। इसमें पेड़ की परिधि का केवल एक-चौथाई भाग लिया जाता है और संशोधित गौज चाकू का उपयोग करके टापिंग खाँचे के निचले भाग से ऊपर की ओर 45 डिग्री के कोण पर टापिंग की जाती है। इसके साथ ही, उचित मात्रा और अंतराल पर उत्तेजक पदार्थों का प्रयोग किया जाना चाहिए।

हाल ही में मुझे पाला के पास चक्कम्पुषा में रहने वाले प्रगतिशील रबड़ किसान एडाट्टुकंडत्तिल चिन्मयन के खेत का दौरा करने का अवसर मिला। चिन्मयन नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग विधि को सफलतापूर्वक अपनाते हैं। रबड़ बोर्ड द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करते हुए लाभप्रद रूप से रबड़ की खेती करने वाले चिन्मयन विभिन्न मीडिया के माध्यम से दूसरों को लाभ पहुँचाने के लिए अपने अनुभव साझा करने में भी रुचि रखते हैं। वे खेती के हर चरण में, शुरुआत से ही, अधिकतम मशीनीकरण पर विशेष ध्यान देते हैं। चिन्मयन का मानना है कि यदि घर और खेत का सारा काम मशीनों की सहायता से किया जाए, तो काम समय पर और कम लागत में पूरा हो सकता है। उनके घर के बगल में बने एक शेड में उनकी सभी मशीनें और उपकरण बड़े करीने से सजे हुए हैं, मानो कोई शोरूम हो, और यह नज़ारा देखने लायक है। यहाँ तक कि शीट बनाने के लिए इस्तेमाल होने वाला रबड़ रॉलर रखने वाला क्षेत्र भी टाइलों से ढका हुआ है और साफ-सुथरा रखा गया है।

तुला ऋतु / अक्टूबर-नवंबर के अंत के साथ ही चिन्मयन पेड़ों की नियंत्रित टापिंग की तैयारी शुरू कर देते हैं। ऊँचाई पर स्थित टापिंग पैनल

में वर्षारोपण लगाकर टाप करने में होने वाली कठिनाई के कारण ऐसा रहा है। वर्तमान में, वह 260 पेड़ों पर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग कर रहे हैं। वह 125 सेंटीमीटर से अधिक ऊँचाई वाले टापिंग पैनल को चार बराबर भागों में बाँट कर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग करते हैं। टापिंग पैनल को चिह्नित करने के बाद, पारंपरिक चाकू से टापिंग खाँचा खोला जाता है। पहले दो-तीन बार पारंपरिक चाकू से टापिंग करने के बाद ही संशोधित गौज चाकू का उपयोग किया जा सकता है। यदि गर्मियों में हर तीन दिन में केवल ऊपरी पैनल पर एक बार टापिंग की जाए, तो एक पैनल से लगभग चार साल तक लाटेक्स प्राप्त किया जा सकता है। इस प्रकार, चार पैनलों से टापिंग करने पर रबड़ के पेड़ की उत्पादक अवधि 16 वर्ष तक बढ़ जाती है। यदि टापिंग वाले पैनल के नीचे एक सहायक पट्टी खोली जाए और आवश्यकतानुसार महीने में एक बार खोली जाए, तो लगातार बहने वाला लाटेक्स सहायक पट्टी से होकर संग्रह कप में गिर जाएगा। उन्होंने अपनी सभी कृषि गतिविधियों की आय और व्यय को अपनी डायरी में दर्ज किया है। तदनुसार, उनका दावा है कि उन्होंने पिछले वर्ष 260 पेड़ों से 1,694 किलोग्राम शीट रबड़ प्राप्त की थी।

नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग की प्रक्रिया में, छाल को सामने की तरफ से काटकर पीछे की तरफ ले जाया जाता है। इसलिए, संग्रह कप को टापिंग खाँचे के शुरूआती बिंदु से 15 सेंटीमीटर नीचे लगाना चाहिए। यदि कप खाँचे के बहुत पास लगा हो, तो उसे गाउज चाकू से टापिंग करना असुविधाजनक होगा। कप को सही जगह लगाने से बहने वाले लाटेक्स को आसानी से इकट्ठा किया जा सकता है।

चिन्मयन को नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग का विचार 2023 में रबड़ बोर्ड के अंतर्गत राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान से प्राप्त टापिंग प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के दौरान आया। जब उन्होंने इसे अपने बागान में सफलतापूर्वक लागू किया और लाभ कमाना शुरू किया, तब उन्हें छह साल पहले अवैज्ञानिक स्लॉटर टापिंग के कारण काटे गए लगभग 2,000 पेड़ों की याद आई। उन्होंने कहा कि यदि उन पेड़ों पर तब नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग लागू की गई होती, तो उन्हें अब भी अच्छा लाभ होता।

उत्तेजक पदार्थों का प्रयोग

नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग में टापिंग पैनल की लंबाई कम होने के कारण, उचित उत्पादन प्राप्त करने के लिए एथेफॉन की अनुशंसित खुराक का प्रयोग किया जाना चाहिए। बाजार में उपलब्ध 10% सांद्रता वाले एथेफॉन घोल को नारियल तेल या ताड़ का तेल मिलाकर 5% सांद्रता तक पतला करने के बाद लाटेक्स प्रवाह रेखा के ऊपर लगाना चाहिए।

आरआरआईआई 105 और आरआरआईआई 430 क्लोनों में, जब हर तीन दिन में एक बार परिधि के एक-चौथाई भाग पर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग विधि से टापिंग की जाती है, तो पिछली टापिंग के अगले दिन, यानी अगली टापिंग से 48 घंटे पहले, एथेफॉन लगाना चाहिए। नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग को बढ़े हुए अंतराल पर सप्ताह में एक बार भी किया जा सकता है। ऐसी स्थिति में टापिंग खाँचे को परिधि के एक-तिहाई भाग तक खोलना चाहिए। इसके अतिरिक्त, हर दो टापिंग के बाद और तीसरी टापिंग से तीन दिन पहले, 5 प्रतिशत सांद्रता वाला एथेफॉन घोल लगाना चाहिए।

संशोधित गौज चाकू

मौजूदा गौज चाकू को नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग के लिए संशोधित किया गया है। संशोधित गौज चाकू इस प्रकार बनाया गया है कि ब्लेड के दोनों किनारे 60 डिग्री के कोण पर झुके हुए हैं। चाकू की नोक तेज है। चाकू को हैंडल से 30 डिग्री के कोण पर लगाया गया है। गाउज चाकू को 120 से 180 सेंटीमीटर लंबे हैंडल से जोड़ा गया है ताकि इसे बिना सीढ़ी की सहायता के जमीन से ही ऊँचाई पर स्थित पैनल की टापिंग के लिए इस्तेमाल किया जा सके। इस चाकू के

इस्तेमाल से छाल की खपत काफी कम हो जाती है और कैंबियम परत/लकड़ी को नुकसान पहुँचाए बिना लाटेक्स निकाला जा सकता है। टापिंग खाँचे का मध्य भाग धंसा हुआ होने के कारण लाटेक्स आसानी से बहकर संग्रह कप में गिर जाता है। लाटेक्स का लकड़ी में रिसकर बर्बाद होने की संभावना भी कम हो जाती है। इस चाकू का एक और फायदा यह है कि टैपर पेड़ के बिल्कुल पास खड़े होकर आसानी से टापिंग कर सकता है।

रबड़ के पेड़ों के मूल पैनल से नवीकृत पैनल की तुलना में अधिक उपज मिलती है, इसलिए नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। 125 सेंटीमीटर से अधिक ऊँचाई वाले मूल पैनल से लगभग 16 वर्षों तक लेटेक्स निकाला जा सकता है, जिससे पेड़ों की उत्पादन अवधि भी बढ़ जाती है। तने की सड़न से प्रभावित पेड़ों से अधिकतम उपज प्राप्त करने में भी नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग विधि उपयोगी है। टापिंग पैनल की लंबाई कम होने के बावजूद, नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग में भी उतने ही पेड़ों से एक दिन में टापिंग की जा सकती है जितने परंपरागत टापिंग में। हमारी जलवायु में, वर्षा ऋतु में वर्षा रोधी आवरण लगाकर टापिंग करना और तुला ऋतु / अक्टूबर-नवंबर के बाद ऊपरी तने पर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग शुरू करने से लंबे समय तक अच्छा उत्पादन प्राप्त होगा और खेती की लागत कम होगी।

नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग

पेड़ों को चिह्नित करने की विधि

आइए देखें कि वर्तमान में 'सी' पैनल पर पहले वर्ष या दूसरे वर्ष में टापिंग किए जा रहे पेड़ों पर नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग करने के लिए मार्किंग कैसे की जाती है। इसके लिए 'सी' पैनल की सामने की रेखा को सीधा ऊपर (ऊपरी मूल पैनल तक) दो मीटर तक बढ़ाकर खींचें। उसके बाद उस भाग को चार बराबर पैनलों में बाँट दें। इसमें 'बी' पैनल के ऊपर आने वाले दो पैनलों में से, दाईं ओर वाले पैनल (पेड़ के सामने खड़े होने पर) पर पहले टापिंग शुरू करनी चाहिए। इसके बाद पैनल पूरा होने पर, इस पैनल के दाईं ओर आने वाले अगले पैनलों पर एक-एक करके टापिंग करनी चाहिए। नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग को सप्ताह में एक बार टापिंग की विधि से भी किया जा सकता है। तब पेड़ की परिधि का एक-तिहाई भाग लेकर टापिंग करनी चाहिए।

ध्यान रखने योग्य बातें

1. चूंकि नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग ऊपर की ओर वाले पैनल पर किया जाता है, इसलिए मार्किंग 45 डिग्री के झुकाव पर करनी चाहिए।
2. टापिंग के लिए लंबे हैंडल वाला संशोधित गौज चाकू उपयोग करना चाहिए। लाटेक्स को बाहर बहने दिए बिना सही गहराई और कोण पर टापिंग करने के लिए यही चाकू सबसे उपयुक्त है।
3. नियंत्रित ऊर्ध्वमुखी टापिंग करते समय टापिंग खाँचे की लंबाई कम होने के कारण उचित उत्पादन प्राप्त करने के लिए अनुशंसित मात्रा में एथेफॉन नामक उत्तेजक दवा का प्रयोग करना चाहिए।

   अधिक जानकारी के लिए रबड़ बोर्ड कॉल सेंटर पर कॉल कर सकते हैं। फ़ोन - 0481-2576622

कर्मक्षेत्र में सजगता के साथ एक और वर्ष... अनुभव और गर्व के साथ

टिंटुमोल एम.
सहायक विकास अधिकारी, प्रादेशिक कार्यालय पुनलूर

रबड़ किसानों की प्रगति और कल्याण को लक्ष्य बनाकर कार्य करने वाली संस्थाओं में रबड़ बोर्ड का महत्वपूर्ण स्थान है। इसी क्रम में वर्ष 2025-26 के दौरान पुनलूर प्रादेशिक कार्यालय द्वारा प्राप्त उपलब्धियाँ उल्लेखनीय एवं अनुकरणीय रही हैं। सीमित कर्मचारियों के साथ प्रारंभ किए गए कार्यों को बाद में अधिक प्रभावी ढंग से विस्तारित किया गया तथा अनेक किसान हितैषी योजनाओं को सफलतापूर्वक लागू किया गया।

पट्टाषि, पुनलूर, पत्तनापुरम एवं अंचल क्षेत्रों में चार क्षेत्रीय स्टेशन, गुणवत्तापूर्ण कप पौध तैयार करने वाली प्रादेशिक पौधशाला तथा टापिंग प्रशिक्षण हेतु टापिंग स्कूल पुनलूर प्रादेशिक कार्यालय के अधीन कार्यरत हैं। यहाँ तैयार किए जाने वाले पौधे पुनलूर, कोट्टारक्करा, अडूर, नेडुमंगाड एवं तिरुवनंतपुरम प्रादेशिक कार्यालयों के अंतर्गत आने वाले किसानों को वितरित किए जाते हैं।

वन क्षेत्र से सटे होने के कारण जंगली जानवरों की समस्या से पौधशाला की गतिविधियाँ प्रभावित होती थीं, फिर भी सीमा सुरक्षा कार्यों, कार्यालय के नवीनीकरण तथा जलापूर्ति सुविधाओं को सुदृढ़ बनाकर उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि की गई। लगभग दस एकड़ क्षेत्र में फैली पौधशाला में कप्प पौध उत्पादन 57,744 से बढ़कर 70,500 तक पहुंचना एक बड़ी उपलब्धि रही।

पुनलूर क्षेत्र में 72 रबड़ उत्पादक संघ कार्यरत हैं। इनमें से 53 संघों ने वार्षिक आमसभा आयोजित कर पंजीकरण नवीनीकरण की प्रक्रिया पूर्ण की। उत्पादक संघों के माध्यम से एकदिवसीय, त्रिदिवसीय तथा आठदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के साथ विभिन्न विकास योजनाओं को भी लागू किया गया।

टापिंग स्कूल के माध्यम से आठ बैचों में 70 लोगों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिनमें से 58 प्रतिभागियों ने सफलतापूर्वक प्रशिक्षण पूर्ण कर प्रमाणपत्र प्राप्त किए। इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति एवं महिला वर्गों के लिए बैग निर्माण, जनरल वर्कर प्रशिक्षण तथा रबड़ प्लांटेशन टापिंग प्रशिक्षण जैसी योजनाओं को समयबद्ध रूप से पूर्ण किया गया। शालियक्करा एस्टेट, कड़क्कामन पौधशाला तथा मधुमक्खी एवं कुकुरमुत्ता खेती केंद्रों के अध्ययन दौरा एवं शास्त्रदर्शन कार्यक्रम भी आयोजित किए गए।

किसान जागरूकता सेमिनार 27, ऑन-फार्म प्रशिक्षण 11 तथा टीआईएसपी योजना के अंतर्गत 8 कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन सभी पर ₹4,57,718 की राशि व्यय की गई।

वर्षा ऋतु में वर्षारक्षण करने वाले किसानों को सहायिकी प्रदान करने में भी कार्यालय ने उल्लेखनीय भूमिका निभाई। वर्षारक्षण करने वाले 1185 किसानों तथा रोगनिरोधक स्प्रे करने वाले 55 किसानों को क्रमशः 41 संघों के माध्यम से ₹ 33,01,360 (825.34 हेक्टेयर) तथा 7 संघों को ₹ 2,17,840 (54.46 हेक्टेयर) की सहायता प्रदान की गई।

इसके अतिरिक्त रबड़ उत्पादक संघ पदाधिकारियों के लिए कोट्टयम स्थित राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित द्विदिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम में 10 सदस्यों की भागीदारी सुनिश्चित करना भी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि रही।

लाटेक्स एकत्रण उपकरणों (11 इकाइयाँ) हेतु विभिन्न 9 उत्पादक संघों से प्राप्त आवेदनों पर विचार कर हॉट एयर ओवन, डिजिटल बैलेंस तथा इलेक्ट्रॉनिक प्लेटफॉर्म बैलेंस जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई गईं। 11 निजी पौधशाला को मान्यता प्रदान की गई तथा मूल्य स्थिरीकरण योजनाओं के अंतर्गत कर नवीनीकरण एवं बिल प्रोसेसिंग जैसे कार्य प्रभावी ढंग से संपन्न किए गए।

यूरोपीय संघ वनोन्मूलन विनियमन अधिनियम के अंतर्गत छोटे बागानों एवं एस्टेटों सहित कुल 370 इकाइयों (2358.24 हेक्टेयर) को मान्यता प्रदान की गई। पुनः रोपण एवं नवरोपण योजनाओं के अंतर्गत 254 किसानों को 108.01 हेक्टेयर क्षेत्र हेतु ₹ 32,39,370 की सहायता प्रदान की गई।

राजस्व आसूचना दस्ता के माध्यम से जिले के रबड़ व्यापार केंद्रों, प्रसंस्करण केंद्रों एवं विनिर्माण इकाइयों को अनुज्ञापन जारी करना, नवीनीकरण तथा ऑनलाइन वापसी जमा करने जैसी सेवाएँ अत्यंत कम शुल्क पर उपलब्ध कराई जा रही हैं।

स्वच्छ भारत योजना के अंतर्गत कार्यालय परिसर को स्वच्छ एवं आदर्श बनाया गया तथा उत्पादक संघों को भी इसके लिए प्रेरित किया गया। कागज़ एवं इलेक्ट्रॉनिक कचरे के निष्पादन से रबड़ बोर्ड को ₹31,731 की आय प्राप्त हुई। वर्ष 2025 पुनलूर प्रादेशिक कार्यालय में ई-फाइलिंग की शुरुआत का भी वर्ष रहा।

श्रमिक कल्याण गतिविधियों को भी इस वर्ष उत्कृष्ट रूप से संचालित किया गया। प्रशिक्षण प्राप्त श्रमिकों को सम्मिलित कर श्रमिक समूह एवं स्वयं सहायता समूह गठित किए गए। कोल्लम जिला मोबाइल नेत्र परीक्षण इकाई के सहयोग से तीन नेत्र परीक्षण शिविर आयोजित किए गए, जिनसे 214 लोगों ने लाभ प्राप्त किया तथा चश्मा खरीदने हेतु 18 आवेदन प्राप्त हुए।

श्रमिक कल्याण योजना के अंतर्गत शिक्षा छात्रवृत्ति, चश्मा सहायता, चिकित्सा सहायता, गृह निर्माण सहायता एवं विवाह सहायता आदि मदों में कुल 176 आवेदन प्राप्त हुए, जिनमें से 155 का निस्तारण कर ₹14,53,000 की सहायता प्रदान की गई।

ग्रूप लाइफ इंश्योरेंस एवं टर्मिनल बेनिफिट स्कीम में 89 नए सदस्यों को शामिल किया गया तथा विभिन्न चरणों में 91 सदस्यों की सदस्यता का नवीनीकरण किया गया।

'रबड़' मासिका के वार्षिक सदस्य के रूप में 25 किसानों को जोड़ा गया तथा ₹17,455 मूल्य के अन्य प्रकाशनों का वितरण किया गया। कोल्लम जिले के आश्रमम मैदान में आयोजित 'कर्षकश्री' प्रदर्शनी मेले में रबड़ बोर्ड के प्रचार विभाग के स्टॉल पर सेवा देने का अवसर हमारे दो विकास अधिकारियों को प्राप्त हुआ।

रबड़ बोर्ड योजनाओं एवं उत्पादक संघों की भूमिका को किसानों तक पहुँचाने के उद्देश्य से गत 24 मार्च को आयोजित समीक्षा बैठक में रबड़

रबड़ उत्पादक संघ के प्रतिनिधि समीक्षा बैठक में भाग ले रहे हैं।

बोर्ड कर्मचारियों एवं रबड़ उत्पादन संघ प्रतिनिधियों सहित 45 लोगों ने भाग लिया। इस अवसर पर बीते वर्ष की गतिविधियों की समीक्षा की गई तथा आगामी वर्ष की कार्ययोजनाएँ तैयार की गईं। उत्कृष्ट सेवाओं के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार भी प्रदान किए गए।

इसके अतिरिक्त विवाह, जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगाँठ, विदाई, राष्ट्रीय पर्वों एवं दौरा कार्यक्रमों जैसे अवसरों पर रबड़ बोर्ड पुनलूर प्रादेशिक कार्यालय परिवार में कार्यरत श्री/श्रीमती जे. दयाबाई (विकास अधिकारी), जानेट रिचार्ड (अनुभाग अधिकारी), टिंटुमोल एम. (सहायक विकास अधिकारी), फरहा एम.के. (क्षेत्रीय अधिकारी), हरिदेव पी. (क्षेत्रीय अधिकारी), हेमलता ओ. (सहायक), सुरेष पी. (सहायक राजस्व आसूचना दस्ता), प्रिंसी एस.पी. (कनिष्ठ सहायक), अभिलाष बी.एस. (सर्वेक्षक), रतीष कुमार ओ. (प्रक्षेत्र सहायक), जिजुराज (प्रक्षेत्र सहायक) तथा कलैसेल्वन (रबड़ टापिंग निदर्शक) की उपस्थिति वर्ष 2025-26 की कार्ययात्रा के सुंदर अध्यायों के रूप में स्मरणीय रही।

आधिकारिक दायित्वों के साथ-साथ व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक संबंधों को भी सुदृढ़ बनाने में वर्ष 2025 विशेष रूप से संतोषप्रद रहा।

इन सभी गतिविधियों के सफल एवं समयबद्ध समन्वय में विकास अधिकारी श्रीमती जे. दयाबाई द्वारा प्रदान किया गया नेतृत्व एवं समर्पण विशेष प्रशंसा का पात्र है।

पुनलूर प्रादेशिक कार्यालय द्वारा वर्ष 2025-26 में प्राप्त उपलब्धियाँ किसान कल्याण एवं उत्कृष्ट प्रशासनिक दक्षता का उज्ज्वल उदाहरण हैं। इस अवसर पर हमारे साथ सहयोग करने वाले, हमारा मार्गदर्शन करने वाले तथा सहायता प्रदान करने वाले रबड़ बोर्ड के सभी विभागों के कर्मचारियों के प्रति हार्दिक धन्यवाद एवं स्नेह प्रकट करते हैं।

कविता

विश्व शांति

श्रीबिंदु आर एस
कनिष्ठ वैज्ञानिक
अधिकारी भारतीय रबड़
अनुसंधान संस्थान

चक्र घूमता है युद्ध भूमि में,
चिंता उगती है मेरे मन में,
चांद को काले बादलों से ढकते देखकर,
चिंता होती है क्या वह रोशनी फिर आएगी।

छोटी-छोटी बातों पर झगड़ों से,
छाया फैलती है युद्ध की,
छल से आपसी झगड़ा करते-करते,
छत छेद कर मरण आता है।

जगत में शांति होनी चाहिए,
जरूर हथियार छोड़ दो,
जोर से शांति का आह्वान दो,
जीवन की सफलता प्राप्त कर लो।

झाड़ू से कूड़ा निकालने की तरह,
झगड़े को निकाल दो मन में से,
नदी से समुद्र में पहुंचते पानी की तरह,
अशांति की झोपड़ी से शांति के महल में जियो।

युद्ध से हम कुछ भी नहीं पाओगे,
युद्ध वैराग्य में मानविकता नष्ट हो जाएगी,
युद्ध के अनंतर कुछ भी मिलें तो,
वह दुख, पीड़ा, अनाथत्व और निस्सहायता है।

मंदिर मस्जिद गिरजाघर,
सभी में एक ही ईश्वर रहता है,
अणु से अखंड तक सकल चराचर में,
भरता है वह चैतन्य।

दुख दीनों पर दया करो,
रोगियों को आश्वास दो,
रोते बच्चों की आंसू को पोंछ दो,
विश्व शांति के लिए प्रार्थना करो।

मीडिया प्रतिनिधियों ने रबड़ बोर्ड का दौरा किया

भारत सरकार की आधिकारिक मीडिया एजेंसी प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो (पी.आई.बी.) द्वारा आयोजित किए जा रहे प्रेस टूर के हिस्से के रूप में भारत के विभिन्न राज्यों के मीडिया प्रतिनिधियों ने रबड़ बोर्ड का दौरा किया। केंद्र और राज्य सरकारों के अधीन विभिन्न संस्थानों और वहाँ लागू की जा रही विकास गतिविधियों को समझने के लिए इस तरह का दौरा आयोजित किया जाता है। श्रीनगर, भुवनेश्वर, गुवाहाटी, मणिपुर आदि स्थानों के प्रेस इन्फॉर्मेशन ब्यूरो के तत्वावधान में वहाँ से आए मीडिया प्रतिनिधियों ने विभिन्न समूहों के रूप में रबड़ बोर्ड का दौरा किया। पी.आई.बी. के संबंधित राज्यों तथा एरणाकुलम कार्यालय के अधिकारियों ने मीडिया प्रतिनिधियों का साथ दिया।

मीडिया प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान आदि का दौरा किया। रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आई.आर.एस., रबड़ उत्पादन आयुक्त डॉ. सिजु टी., राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान की निदेशक प्रिया वर्मा एच., रबड़ अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों, बोर्ड के वरिष्ठ अधिकारियों आदि से प्रतिनिधियों ने बातचीत की। रबड़ क्षेत्र, रबड़ बोर्ड और बोर्ड द्वारा लागू की जा रही विभिन्न योजनाओं के बारे में कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन ने मीडिया प्रतिनिधियों को विस्तार से समझाया। इसके बाद रबड़ की खेती के विस्तार के लिए रबड़ की खेती वाले राज्यों में रबड़ बोर्ड द्वारा वर्तमान में लागू की जा रही योजनाओं और

वहाँ की विकास संभावनाओं के बारे में मीडिया प्रतिनिधियों ने कार्यकारी निदेशक से चर्चा की। भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान पहुँचे मीडिया प्रतिनिधियों को अनुसंधान केंद्र और वहाँ चल रहे अनुसंधान कार्यों के बारे में वैज्ञानिकों ने विस्तार से बताया।

विभिन्न राज्यों के मीडिया प्रतिनिधियों द्वारा रबड़ बोर्ड के दौरे की खबरों को प्रत्येक राज्यों के दृश्य और प्रिंट मीडिया ने बहुत प्रमुखता के साथ रिपोर्ट किया।

दो मशीन, चार लोग - एक लद्दाख यात्रानुभव

नसीफ ए यू
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
सतर्कता प्रभाग

दिसंबर 2017 की एक ठंडी शाम को, अपने दोस्त से फोन पर बातचीत के दौरान, मैंने उससे एक सवाल पूछा जो मेरे मन में काफी समय से चल रहा था। 'हे प्रजी, क्या हम बर्फ की धरती पर घूमने चलें?' उसने यह बात सुनते वक्त ही मान गया, और इस तरह हमारी अगली यात्रा शुरू हुई - भारत के मुकुट की ओर, सपनों की राजधानी और यात्रियों के स्वर्ग - कश्मीर की जादुई दुनिया, जो भारत की उत्तरी सीमाओं के पार बसी है।

यात्राओं की योजना बनाने का मेरा जुनून हमेशा से ही सीमाओं से परे इस भूमि के सबसे खूबसूरत नज़ारों की ओर खिंचा चला आया है। केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु की घुमावदार सड़कों पर प्रजीश के साथ बाइक की वो यात्राएँ मेरी ज़िंदगी की किताब के सुनहरे पन्ने हैं - हर सफ़र अनगिनत कहानियों, हँसी, संघर्षों और अविस्मरणीय पलों से भरा हुआ।

हर यात्रा पर निकलने से पहले और वापस आने के बाद एक-दूसरे को गले लगाना धीरे-धीरे हमारी एक रस्म बन गई - एक ऐसी कला जो एक खास मंच पर प्रस्तुत की जाती थी, हर नए रोमांच की शुरूआत और अंत को चुपचाप चिह्नित करती थी। दो समान विचारधारा वाले लोग, हर परिस्थिति में समझौता करने और किसी भी वातावरण में ढलने के लिए तैयार - यही हमारी यात्राओं की ताकत थी। मेरे लिए, यात्रा की सच्ची सुंदरता केवल गंतव्य में ही नहीं, बल्कि साथ यात्रा करने वाले लोगों के बीच के बंधन में निहित है। यही जुड़ाव हर सड़क को एक स्मृति में और हर पल को एक यादगार अनुभव में बदल देता है।

जब भी मैं यात्रा करता हूँ, मैं अक्सर ट्रिपएडवाइज़र इंडिया (Tripadvisor India) पर साथी यात्रियों द्वारा साझा किए गए अनुभवों का सहारा लेता हूँ - एक ऐसा सुकून देने वाला सहारा जो मुझे रास्ते में आने वाली अनिश्चितताओं और बाधाओं से उबरने में मदद करता है। इसी मंच के माध्यम से मुझे फेसबुक पेज 'संचारी' के बारे में पता चला, जिसकी कहानियाँ और यात्रा संबंधी जानकारियाँ मेरे लिए बेहद उपयोगी साबित हुईं, और मैं जल्द ही इसका अनुयायी बन गया।

यात्रा के दौरान, जाने-अनजाने में, मुझे एक सैन्य रणनीतिकार की भूमिका सौंप दी गई - वह व्यक्ति जो योजनाएँ बनाने, मार्ग तैयार करने और यात्रा का समय आने पर मिशन का नेतृत्व करने के लिए जिम्मेदार था। हमने अपने फेसबुक पेज 'संचारी' से जुड़े अनगिनत लोगों के साथ साझा किए गए अनुभवों के माध्यम से अपनी यात्रा के पदचिह्नों को आकार देने का निर्णय लिया - चाहे वह व्यक्तिगत मुलाकातों, संदेशों या लंबी फोन बातचीत के माध्यम से हो। उन साझा कहानियों और प्रेरणाओं से ही गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और

चंडीगढ़ के राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों में हमारी सपनों की बाइक यात्रा का जन्म हुआ।

यात्रियों के बीच बातचीत से शुरू हुआ यह सफर धीरे-धीरे एक यादगार बाइक यात्रा में बदल गया, जिसने हमें ऐसे परिदृश्यों, संस्कृतियों और अनुभवों से रूबरू कराया जो एक सामान्य यात्रा की सीमाओं से परे थे। मेरे विचार से, यदि आप वास्तव में प्रकृति के विशाल सौंदर्य को निहारना चाहते हैं और घुमावदार सड़कों पर ऐसे रोमांच का अनुभव करना चाहते हैं जैसे कानों में पंख की हल्की सी झनझनाहट, तो बाइक से यात्रा करना सबसे अच्छा विकल्प है। हालांकि, कई लोगों को लगा कि केवल दो लोगों के साथ यात्रा करना सुरक्षित नहीं होगा, इसलिए हमें अंततः यात्रा में दो और साथियों को शामिल करने पड़े। इसी तरह प्रजीश के करीबी दोस्त लक्ष्मणन और अफसल भी इस सफर का हिस्सा बन गए।

एक सच्चे प्रतियोगी की तरह, दिल से, मन से और दिमाग से, एक प्रतियोगी की तीव्रता के साथ मैंने अपने यात्रानुभवों को ह्रदय में बसाकर हर दिन आगे बढ़ना जारी रखा। प्रजीश के दोस्तों के साथ लंबी बातचीत ने मुझे धीरे-धीरे उनके करीब ला दिया। इस प्रकार, तीन महीने की निरंतर तैयारी और योजना के बाद, अंततः यात्रा कार्यक्रम तैयार हो गया। प्रत्येक गंतव्य के बदलते मौसम के अनुसार यात्रा कार्यक्रम में बदलाव करते हुए, हमने सितंबर 2018 के लिए यात्रा की योजना बनाई - जो 1 तारीख से शुरू होकर 22 तारीख को समाप्त हुई - और इस तरह हमने प्राप्त 17 दिनों की छुट्टी का भरपूर लाभ उठाया। सितंबर का महीना गुजरात, राजस्थान, दिल्ली, हरियाणा, उत्तर प्रदेश और पंजाब जैसे राज्यों में सुहावने और ठंडे मौसम का होता है। साथ ही, यह वह समय भी है जब जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ जैसे क्षेत्रों में कड़ाके की सर्दी शुरू होने से ठीक पहले का समय होता है।

प्रजीश रेलवे अधिकारी हैं, लक्ष्मणन कूरियर सेवा का कारोबार चलाते हैं और अफसल प्रदर्शनी स्टॉल का व्यवसाय संभालते हैं। प्रजीश और मेरे लिए छुट्टी पहले से ही तय थी। चूंकि लक्ष्मणन और अफसल स्वरोजगार करते थे, इसलिए यात्रा के दौरान उनके व्यापारिक दायित्व अस्थायी रूप से उनके साझेदारों ने संभाल लिए। चूंकि यात्रा बाइक से तय की गई थी, इसलिए हमने मोटरसाइकिलों को पालक्काड़ से गुजरात के अहमदाबाद रेलवे स्टेशन तक ट्रेन से भेजने का फैसला किया। यात्रा पूरी होने के बाद, बाइकों को दिल्ली से पालक्कड़ वापस भेजने और हवाई जहाज से घर लौटने की योजना थी। खर्च कम करने के लिए हमने दिल्ली से कोयंबतोर की फ्लाइट टिकट अप्रैल में ही बुक कर ली थी, जिससे हमें काफी कम दाम में टिकट मिल गई।

इसके बाद कई दिन इंतज़ार, उत्साह और आगे की यात्रा की अंतहीन तैयारियों में बीत गए। कई बाइक सवारों को लगा कि हरियाणा के अंदरूनी इलाकों से होकर यात्रा करना खतरनाक है, इसलिए हरियाणा को छोड़कर अन्य राज्यों के ग्रामीण क्षेत्रों से होकर यात्रा करने की योजना बनाई। हमने सुना था कि कई जगहों पर गुंडे उनकी बाइक रोककर उनके हाथों में मौजूद नकद और एटीएम कार्ड से पैसे निकलवा लेते हैं। इस समस्या से निपटने के लिए लक्ष्मण ने जगथी को अपना साथी चुना। यात्रा के दौरान ज़्यादा नकदी न ले जाने के लिए हमने लगभग सारा पैसा जगथी के खाते में जमा कर दिया और इस तरह से व्यवस्था की कि एक समय में हमारे पास सिर्फ दस हज़ार रुपये ही रहे। जब भी हमारे खाते में तीन हज़ार रुपये से कम हो जाते, हम जगथी को संदेश भेज देते और दस हज़ार रुपये तुरंत खाते में ट्रांसफर हो जाते।

कई अनुभवी यात्रियों ने हमें ऊँचाई वाले क्षेत्रों में यात्रा करते समय तीव्र पर्वतीय रोग (AMS) की संभावना के बारे में भी आगाह किया था। अधिक ऊँचाई पर साँस फूलना, अत्यधिक थकान, चक्कर आना और उल्टी जैसे लक्षण अचानक प्रकट हो सकते हैं। इसलिए, हमें ऊँचाई वाले क्षेत्रों में

चढ़ाई करने से एक रात पहले डायमॉक्स की एक गोली लेने की सलाह दी गई थी। चूंकि ऊँचाई वाले क्षेत्रों में ऑक्सीजन का स्तर बहुत कम होता है, इसलिए हमने यात्रा के दौरान आपातकालीन उपयोग के लिए छोटे पोर्टेबल ऑक्सीजन सिलेंडर खरीदे। इसके बाद, हमने यात्रा के सभी आवश्यक उपकरण तैयार करना शुरू कर दिया - राइडिंग गियर, सामान ले जाने के लिए लगेज कैरियर और एक पूरी प्राथमिक चिकित्सा किट।

हमें यह भी पता चला था कि कश्मीर के कई दूरस्थ क्षेत्रों में पेट्रोल पंप कम हैं, इसलिए हमने दोनों बाइकों के लिए दो अतिरिक्त 5-लीटर ईंधन के डिब्बे खरीदे। हमारी दोनों मोटरसाइकिलों में ट्यूब वाले टायर लगे थे, इसलिए कई अनुभवी राइडर्स ने हमें सलाह दी कि यात्रा के दौरान, खासकर पहाड़ी इलाकों में जहां मदद आसानी से नहीं मिल पाती, पहियों को खुद निकालना और ठीक करना सीखना बेहद उपयोगी होगा। इसलिए लक्ष्मण और मैंने इस तकनीक को खुद सीखने का पक्का इरादा कर लिया। दूरदराज और निर्जन क्षेत्रों में, अगर टायर या ट्यूब फट जाए, तो हमारे पास पहिया जल्दी से निकालने और दूसरी बाइक पर कई किलोमीटर चलकर किसी मरम्मत की दुकान तक पहुंचने और उसे ठीक करवाने के अलावा कोई चारा नहीं होगा। हमें यह भी पता चला कि इतनी लंबी दूरी की यात्राओं के दौरान, सुचारू और सुरक्षित यात्रा सुनिश्चित करने के लिए मोटरसाइकिलों की लगभग हर 1,500 किलोमीटर पर पूरी सर्विसिंग करानी होगी।

चूंकि यह एक साहसिक यात्रा थी, खासकर लद्दाख के ऊबड़-खाबड़ इलाकों में, जहां हमें लगातार छोटे झरने और पथरीले रास्तों को पार करना था, इसलिए गिरने और घायल होने की संभावना काफी अधिक थी। हालांकि, मुझे एहसास हुआ कि लेग गार्ड और लगेज कैरियर जैसे उचित सुरक्षा उपकरण अपनाकर चोट के जोखिम को काफी हद तक कम कर सकते हैं। बाइक के पलट ने की स्थिति में भी, लगेज कैरियर आमतौर पर पहले जमीन पर गिरता था, उसके बाद लेग गार्ड और फिर हैंडल बार, जिससे हमारे हाथों या पैरों के जमीन में फंसने या घायल होने की संभावना काफी कम हो जाती थी। उस दौरान श्रीनगर क्षेत्र में लगातार हो रहे आतंकवादी हमलों के कारण, अचानक कर्फ्यू लगने की आशंका हमेशा बनी रहती थी। ऐसी स्थिति उत्पन्न होने पर, कर्फ्यू पांच दिनों तक जारी रह सकता था, जिससे यात्रा योजनाओं पर गंभीर प्रभाव पड़ सकता था।

लद्दाख क्षेत्र की ओर जाने वाले यात्रियों के लिए लेह एक प्रमुख और सबसे खूबसूरत प्रवेश द्वार है। दिल्ली से लेह पहुँचने के दो मुख्य मार्ग हैं। एक मार्ग हिमाचल प्रदेश से होकर गुजरता है, जबकि दूसरा जम्मू-कश्मीर के श्रीनगर और कारगिल से होकर जाता है। अनुभवी यात्रियों के अनुसार, श्रीनगर मार्ग लेह पहुँचने का बेहतर विकल्प माना जाता है। इसका कारण यह है कि हिमाचल प्रदेश से होकर जाने वाले मार्ग में खड़ी पहाड़ी सड़कों पर तेजी से चढ़ाई करनी पड़ती है, जिससे यात्री बहुत जल्दी लेह की ऊँचाई पर पहुँच जाते हैं। ऊँचाई में अचानक वृद्धि के कारण, शरीर को लेह में कम ऑक्सीजन स्तर और कम वायुमंडलीय दबाव के अनुकूल होने में कठिनाई हो सकती है। परिणामस्वरूप, तीव्र पर्वतीय रोग (एएमएस) विकसित होने की संभावना काफी बढ़ जाती है।

हमने तय किया कि मनाली लौटने का हमारा सफर चीन की सीमा के पास स्थित त्सो मोरीरी और प्रसिद्ध पैंगोंग त्सो झील के मनमोहक नज़ारों से होकर गुज़रेगा - ठीक उसी जगह पर जहां हिंदी फिल्म '3 इडियट्स' के आखिरी दृश्य फिल्माए गए थे। और इस तरह, अनगिनत आशाओं, सपनों, अपेक्षाओं और जीवन की विविधता का अनुभव करने की ललक के साथ, हम चारों आखिरकार तैयार होकर आगे की यात्रा का इंतज़ार करने लगे।

(अगले अकं में जारी.....)

कारगिल युद्ध की यादें: एक सैनिक की डायरी से...

वेणुगोपाल
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1,
प्रादेशिक कार्यालय
तृश्शूर

एक सैनिक के रूप में, कारगिल के दिनों में मैं सिग्नल रेजिमेंट के साथ अहमदाबाद, गुजरात में तैनात था, जो संचार में विशेषज्ञता रखती थी। हमें राजस्थान की सीमा की ओर बढ़ने का आदेश मिला।

हमारी यात्रा से दो दिन पहले, मेरा 2 वर्षीय बेटा (साइकिरण वेणुगोपाल) बिस्तर से गिरने के कारण लगातार उल्टी कर रहा था। मैंने अपने कमांडिंग ऑफिसर से मुझे दो दिन के लिए रुकने का अनुरोध किया, लेकिन उन्होंने मुझे प्रेरित किया कि मैं केरल से हूं और मेरी पत्नी एक स्नातक है, वह इसे संभाल सकती है और हमारे देश को मेरी सेवा की आवश्यकता है।

जब हम सीमा की ओर बढ़े, तो हजारों कॉलेज की लड़कियों ने राखी और तिलक बांधकर हमें विदाई दी। आज भी मुझे याद है कि हमारे ट्रेन यात्रा के दौरान हमें कैसे सम्मानित किया गया था। स्टेशनों पर लोग खाने-पीने की चीजें और अन्य सामग्री जैसे टॉयलेट आइटम आदि दान कर रहे थे, दुकानदारों ने हम से एक पैसा भी लेने से इनकार कर दिया। वे हमें आशीर्वाद दे रहे थे! लोग पाकिस्तान विरोधी नारे लगा रहे थे।

हम सीमा के पास तैनात थे। शुरुआती दिनों में ट्रेंच बनाने की तैयारी में व्यस्त थे। दिन गर्म और रातें ठंडी थीं। दिन में टेंट बंद रहते थे और जब हम उड़ने वाले विमानों या मिसाइलों की आवाज सुनते थे, तो हमें ट्रेंच में छिपने का आदेश दिया जाता था। रात में टेंट खुले और लाइट्स की अनुमति नहीं थी।

हम लगभग 6 महीने तक सीमा पर रहे। जब स्थिति सामान्य हुई, तो हमें सामान्य दिनचर्या में लौटने के लिए कहा गया। बाद में कारगिल विजय के बाद, मुझे आगे के क्षेत्र से एक शांत क्षेत्र में देहरादून, उत्तराखंड में तैनात किया गया।

मुझे अपने भारत माता की सेवा करने का अवसर मिला जब उन्हें इसकी सबसे अधिक आवश्यकता थी। इस अनुभव ने मुझे गर्व और संतुष्टि की भावना दी। मैं अपने देश के लिए कुछ करने का अवसर पाकर धन्य महसूस करता हूं।

रबड़ बोर्ड में सतर्कता जागरूकता सप्ताह-समापन समारोह

रबड़ बोर्ड में आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह के समापन समारोह में माननीय कोट्टयम प्रधान जिला एवं सत्र न्यायाधीश मनोज एम. ने मुख्य भाषण दिया। उन्होंने कहा कि भ्रष्टाचार विकासशील अर्थव्यवस्था पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है और यह संविधान की प्रस्तावना में शामिल मूल्यों से विचलन है। उन्होंने यह भी कहा कि जहाँ भ्रष्टाचार शुरू होता है, वहाँ अधिकार समाप्त हो जाते हैं। केवल रिश्वत ही नहीं, बल्कि निधि का दुरुपयोग, दुर्व्यवहार, भाई-भतीजावाद, कदाचार आदि भी भ्रष्टाचार की ओर ले जाते हैं और ये संस्थानों को कमजोर करते हैं।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह के अंतर्गत, रबड़ बोर्ड द्वारा कोट्टयम के विभिन्न स्कूलों और कॉलेजों के विद्यार्थियों तथा बोर्ड के कर्मचारियों के लिए आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेताओं को उन्होंने पुरस्कार वितरित किए।

बैठक में उपस्थित लोगों का स्वागत करते हुए रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आई.आर.एस. ने कहा कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ाई प्रत्येक व्यक्ति से शुरू होनी चाहिए और यह एक सामूहिक उत्तरदायित्व है। रबड़ बोर्ड की सहायक सतर्कता अधिकारी श्रीविद्या पी. ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

भ्रष्टाचार के विरुद्ध जन-जागरूकता बढ़ाने और सार्वजनिक जीवन में सत्यनिष्ठा को प्रोत्साहित करने के लिए, केंद्रीय सतर्कता आयोग के निर्देशानुसार, 27 अक्टूबर से 02 नवंबर तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2025 मनाया गया। केंद्रीय सतर्कता आयोग के नेतृत्व में, एक सप्ताह तक चले इस कार्यक्रम ने सत्यनिष्ठा की शपथ लेना, जागरूकता कार्यक्रम आयोजित करना आदि गतिविधियों के माध्यम से सभी को भ्रष्टाचार के विरुद्ध लड़ने के लिए प्रेरित किया।

अफ्रीका की छत - किलिमंजारो का उहुरू शिखर (यात्रावृत्त)

कुछ सपने ऐसे होते हैं.....
वे आँखों में नहीं,
आत्मा में जन्म लेते हैं।
वर्षों तक मन के किसी कोने में शांत रहते हैं,
और एक दिन,
हमें हमारी मंज़िल तक ले जाते हैं।
आपके सपने आपको मंज़िल तक ले जाएं।

जब मैं स्कूल में दसवीं कक्षा में पढ़ती थी, तब जियोग्राफी की किताब के एक छोटे-से अध्याय में मैंने पहली बार किलिमंजारो का नाम पढ़ा था। किताब में उसकी तस्वीर भी थी - बादलों के बीच खड़ा एक विशाल पर्वत और सफेद बर्फ से ढका ऊँचा शिखर। उस दिन मुझे नहीं पता था कि यह सिर्फ एक पर्वत नहीं, बल्कि मेरे जीवन का सपना बनने वाला है। वह तस्वीर मेरे मन में गहराई से बस गई। मैं कभी-कभी सोचती थी - क्या मैं भी उस शिखर तक पहुंच पाऊँगी? क्यों किलिमंजारो?

शोभा ए एन
कनिष्ठ सहायक ग्रेड-1
मुख्यालय

अफ्रीका का सबसे ऊँचा बिंदु, सात सबसे ऊँची शिखरों में से एक शिखर, सबसे ऊँचा अकेला पर्वत, सबसे ऊँचा निष्क्रिय ज्वालामुखी।

साल बीत गए, लेकिन मेरा सपना मरा नहीं। भारत की गर्म गलियों और गांव सड़कों पर टहलते समय भी मेरे मन में अफ्रीका की ठंडी हवा बहती थी। और मैं खुद से कहती थी - 'एक दिन मैं भी किलिमंजारो पर जाऊँगी, वहाँ खड़ी होऊँगी।'

पढ़ाई पूरी करने के बाद मुझे सरकारी नौकरी मिल गई। इडुक्की जिले के पीरमेड में प्रोग्रामर के पद पर मैंने जॉइन किया। 23 वर्ष की उस उम्र में परिवार की ज़्यादा ज़िम्मेदारियाँ न होने के कारण मैं अपनी नौकरी का आनंद ले रही थी। जहाँ भी देखो, आसपास पहाड़ ही पहाड़ थे। मैं और मेरी दोस्त काम के बाद और वीकेंड में हाइकिंग करने लगें। इसके बाद केरल के अंदर और कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्र, हिमाचल जैसे अन्य राज्यों में भी हाइकिंग करने का मौका मिला। अगस्त्यकूडम, ब्रह्मगिरी, कुडजाद्री, कुद्रमुख, कुरिंजल, सिंहाचलम, रासोल, ग्रहण, पादरी आदि इनमें कुछ ट्रेक हैं।

2024 में नेपाल में एवरेस्ट बेस कैंप तक चढ़ने का एक अवसर भी मुझे मिला। लेकिन यह एक सुखद अनुभव नहीं था। फिर भी विशाल एवरेस्ट का नज़ारा अविश्वसनीय था। मुझे एवरेस्ट पर विजय प्राप्त कर चुके पर्वतारोहियों से मिलने और बातचीत करने का मौका भी मिला। वहाँ बहुत से लोग एवरेस्ट चढ़ने की अपनी बारी आने की प्रतीक्षा में रुके हुए थे। सात शिखरों में से एक पर विजय प्राप्त करने का मेरा सपना फिर से जाग उठा।

1 सितंबर 2025 को मैं कोच्चि से मुंबई होते हुए फ्लाइट से अफ्रीका के केनिया पहूँची, और वहाँ से टंज़ानिया तक किराए की टैक्सी में रोड टिप की। किलिमंजारो टांज़ानिया में है और इसकी ऊँचाई 5,895 मीटर है। मैं और मेरी 14 दोस्तों ने 3 सितंबर को अपनी चढ़ाई शुरू की। भोजन, तंबू, सरकारी अनुमति जैसी सभी व्यवस्थाओं के लिए हमने टांज़ानिया की ज़ाफ टूर्स की मदद ली। ट्रैकिंग के दौरान हमारे साथ आने वाले गाइड को किली फाइटर कहा जाता है। किली फाइटर के बिना हमारी यात्रा पूरी नहीं हो सकती थी। मैं अपनी इस उपलब्धि के लिए अपने गाइड एलेक्स की बहुत आभारी हूँ। मेरे घुटने की कुछ समस्या के कारण मैं टीम से थोड़ा पीछे रह गई और सबसे अंत में शिखर पर पहुँची। उस समय मैं सच में रो रही थी क्योंकि मुझे कभी-कभी संदेह होता था कि क्या मैं ये चढ़ाई पूरी कर पाऊँगी। जब हम शिखर पर पहुँचे, तब वहाँ मैं और एलेक्स के अलावा कोई नहीं था। कुछ पल बाद जब मैंने उसे ढूँढा, तो वह कुछ दूर पर घुटनों के बल बैठा था और उसके हाथ आसमान की ओर थे। एक पल को मुझे लगा कि शायद एलेक्स को मेरे शिखर पर पहुँचने की खुशी मुझसे भी ज्यादा है। तब 9 सितंबर 2025 को दोपहर के 1:00 बजे का समय था।

जब मैंने टांज़ानिया की धरती पर कदम रखा, दूर आसमान के नीचे खड़ा किलिमंजारो दिखाई दे रहा था। उसकी शिखर पर चमकती बर्फ सूरज की पहली किरणों से सोने जैसी चमक रही थी। उस पल मुझे लगा जैसे बचपन की किताब का एक सपना अचानक जीवंत हो गया।

चढ़ाई की शुरुआत में रास्ते हरे-भरे जंगलों से घिरे थे। लेकिन पर्वत की असली परीक्षा धीरे-धीरे आई। ऊँचाई बढ़ने के साथ साँस लेना मुश्किल हो गया। दिन बहुत गर्म और रातें उतनी ही अधिक ठंडी हो गईं। भोजन करना भी कठिन हो गया। मेरी टेंटमेट और हमारी टीम लीडर स्वास्थ्य समस्याओं के कारण बीच में ही ट्रेकिंग छोड़ दिया। थकान होने पर भी सोना बहुत कठिन हो गया। कुछ दोस्तों को मतिभ्रम का अनुभव भी हुआ।

सबसे कठिन समिट नाइट थी। रात 11:00 बजे हमने चढ़ाई शुरू की। चारों ओर अंधेरा था। केवल टॉर्च की रोशनी और कदम बढ़ाने की आवाज़। हवा इतनी ठंडी थी कि हाथ सुन्न हो रहे थे। हर कदम के साथ ऐसा लगता था जैसे मैं अपने डर, अपनी सीमाओं और अपनी कमज़ोरियों से लड़ रही हूँ। एलेक्स, मेरे गाइड, बार-बार कहते 'पोले-पोले' मतलब धीरे-धीरे।

एलेक्स ने मुझे एक और बात कही, 'आप घड़ी की सेकंड की सुई हैं'। आप थकती नहीं, रुकती भी नहीं - चलती ही रहती हैं। पर्वत हमें सिर्फ थकाता नहीं, वह हमारे भीतर की ताकत को दिखाता है।

किलिमंजारो ने मुझे सिखाया कि सपने ज़रूर दूर होंगे लेकिन असंभव नहीं।
रास्ते कठिन हो सकते हैं,
कदम धीरे पड़ सकते हैं,
लेकिन अगर दिल में आग है,
तो मंज़िल एक दिन ज़रूर मिलती है।

एक आखिरी बातः 'हौसला ही ऊँचाई है'. हर शिखर हमें यह याद दिलाने के लिए खड़ा है कि आसमान छूने से पहले, अपने डर के ऊपर उठना होता है।

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में वरिष्ठ अधिकारियों के लिए राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम

27 जनवरी 2026 को भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में वरिष्ठ अधिकारियों के लिए एक राजभाषा जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कक्षा में संस्थान के निदेशक अनुसंधान एवं विभिन्न विभागों के प्रमुख उपस्थित रहे। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य संस्थान में राजभाषा हिंदी के प्रयोग, राजभाषा नीति, तथा राजभाषा अधिनियम और नियमों की व्यावहारिक जानकारी देना था। उपस्थित वरिष्ठ अधिकारियों को राजभाषा के महत्व और उसके अनुपालन के विभिन्न पहलुओं पर व्यापक जानकारी दी गई।

कार्यक्रम का संचालन सहायक निदेशक, राजभाषा ने किया। उन्होंने चर्चा में राजभाषा अधिनियम 1963, इसके नियम, और राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशानिर्देशों का विशेष रूप से उल्लेख किया। इसके अतिरिक्त, उन्होंने यह भी समझाया कि सरकारी कार्यालयों में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने हेतु किन-किन कदमों की आवश्यकता है और विभिन्न विभागों में इसे कैसे प्रभावी ढंग से लागू किया जा सकता है। वरिष्ठ अधिकारियों ने भी कक्षा में सक्रिय भागीदारी दिखाई और हिंदी के प्रयोग से जुड़े अपने अनुभव साझा किए।

कार्यक्रम के माध्यम से न केवल राजभाषा नीति की जानकारी दी गई, बल्कि यह भी समझाया गया कि सभी विभागीय कार्यों में हिंदी का संतुलित और प्रभावी उपयोग कैसे सुनिश्चित किया जा सकता है।

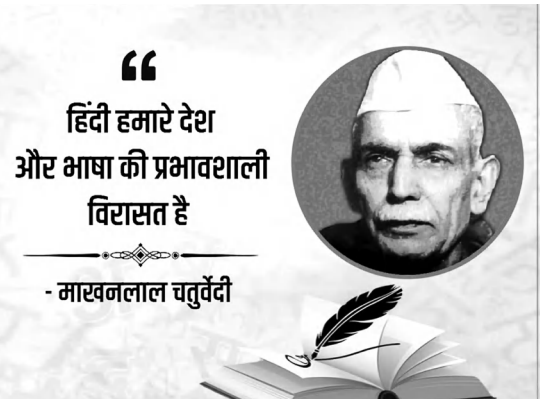

संसदीय राजभाषा समिति की आलेख एवं साक्ष्य उप-समिति द्वारा दिनांक 04.01.2026 से 07.01.2026 तक कुमरकम, कोट्टयम का निरीक्षण दौरा

इस दौरे का उद्देश्य केरल के 11 नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों जिनमें कोट्टयम नराकास भी शामिल है, में राजभाषा प्रवर्तन और कार्यान्वयन की स्थिति का अवलोकन करना था। दिनांक 05 जनवरी 2026 को उप-समिति द्वारा कोट्टयम नराकास के अधीन कुल 7 कार्यालयों का निरीक्षण किया गया। इस अवसर पर आयोजित निरीक्षण बैठक में सभी सातों कार्यालयों के प्रमुख उपस्थित रहे तथा उन्होंने अपने-अपने कार्यालयों में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन से संबंधित प्रगति, उपलब्धियों एवं चुनौतियों की जानकारी उप-समिति के समक्ष प्रस्तुत की।

कोट्टयम नराकास के अधीन निरीक्षण किए गए कार्यालय एवं कार्यालय प्रमुख

निरीक्षण के दौरान उप-समिति ने निम्नलिखित कार्यालयों एवं उनके प्रतिनिधियों के साथ समीक्षा बैठक की:

रबड़ बोर्ड मुख्यालय, कोट्टयम	श्री एम वसंतगेशन आई आर एस
भारतीय खाद्य निगम, कोट्टयम	श्री मीठालाल मीना
राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, कोट्टयम	श्री बिजो जोसफ

नेशनल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड, कोट्टयम	श्री विनोद कुमार आर
पी.एम. श्री केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम	श्री ज्योति मोहन एन. वी.
जवाहर नवोदय विद्यालय, कोट्टयम	श्रीमती जॉली विन्सेंट
केंद्रीय कर एवं उत्पाद सुल्क, कोट्टयम	श्री जेबॉय तोमस

उप-समिति के सुझाव

निरीक्षण के उपरांत संसदीय राजभाषा समिति की उप-समिति द्वारा कोट्टयम नराकास के कार्यों के लिए एक अच्छा प्रमाणपत्र प्रदान किया गया। साथ ही, उप-समिति ने नराकास की कार्यप्रणाली को और अधिक प्रभावी बनाने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश एवं मार्गदर्शन भी प्रदान किए।

उप-समिति द्वारा कोट्टयम नराकास के अधीन कार्यालयों को सुधारात्मक उपायों के लिए विभिन्न बिंदुओं की एक सूची तथा विस्तृत समीक्षा प्रतिवेदन भी सौंपा गया, जिन पर विशेष ध्यान देते हुए आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित करने के निर्देश दिए गए। इसके उप-समिति ने यह भी निर्देशित किया कि इन बिंदुओं पर की गई कार्यवाही के संबंध में एक कार्रवाई प्रतिवेदन तैयार कर 6 माह के भीतर संसदीय राजभाषा समिति को प्रेषित किया जाए।

कविता

माँ की यादें

तुम मेरे लिए कौन थीं?
माँ, बहन या दोस्त?
वे दिन जो हमने साथ बिताए
मेरी यादों में ताज़ा
यह जानते हुए कि वे दिन दोबारा नहीं लौटेंगे
मन में खालीपन छा गया है
विचार काँटों की तरह चुभ रहे हैं
तुम्हारी उपस्थिति अभी भी अमर है
मुझे जीने की शक्ति देती है
तुम्हें जो कष्ट सहने पड़े
मुझे पालने-पोसने में
तुम्हें जो संघर्ष करने पड़े
मुझे मजबूत बनाने के लिए
ईश्वर करे मुझे वह अवसर मिले
तुम्हारे साथ एक और जीवन
मेरी इच्छाओं को पूरा करने के लिए
जो अधूरी रह गई।

श्रीमती रमा जी नायर
कनिष्ठ सहायक ग्रेड -1
मुख्यालय

राजभाषा संगोष्ठी

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के 25वें संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह के अंतर्गत 6 फरवरी 2026 को अपराह्न 2:00 बजे से 4:00 बजे तक राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान पुतुप्पल्ली के सभागार में कॉलेज विद्यार्थियों के लिए 'करियर मार्गदर्शन' विषय पर एक राजभाषा संगोष्ठी आयोजित की गई।

कार्यक्रम का शुभारंभ निदेशक, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान, रबड़ बोर्ड श्रीमती प्रिया वर्मा के स्वागत एवं प्रारंभिक उद्‌बोधन से हुआ। इस अवसर पर विभिन्न सदस्य कार्यालयों के अधिकारीगण भी उपस्थित रहे। संगोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री प्रशांत जी. पै, वरिष्ठ प्रबंधक, केनरा बैंक, एरणाकुलम थे।

उन्होंने विद्यार्थियों को हिंदी भाषा सीखने के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बताया कि हिंदी के ज्ञान के माध्यम से बैंकिंग, केंद्रीय सेवाओं, सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों, अनुवाद, मीडिया तथा अन्य विविध क्षेत्रों में किस प्रकार व्यापक करियर संभावनाएँ विकसित की जा सकती हैं। साथ ही उन्होंने प्रतिस्पर्धी परीक्षाओं की तैयारी, व्यक्तित्व विकास एवं संप्रेषण कौशल के महत्व पर भी विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया।

संगोष्ठी में विभिन्न कॉलेजों से कुल 43 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों ने सक्रिय सहभागिता करते हुए अपने प्रश्नों के माध्यम से करियर संबंधी जिज्ञासाओं का समाधान प्राप्त किया।

कोट्टयम नराकास के अधीन सदस्य कार्यालयों से हिंदी पदधारी भी संगोष्ठी में उपस्थित थे। यह संगोष्ठी विद्यार्थियों के लिए अत्यंत उपयोगी एवं प्रेरणादायी सिद्ध हुई तथा संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह का एक महत्वपूर्ण एवं सफल आयोजन रहा।

भाग लिए सभी विद्यार्थियों और कॉलेजों को प्रमाणपत्र भी वितरित किए।

राजभाषा संगोष्ठी की कुछ झलकियाँ

कविता

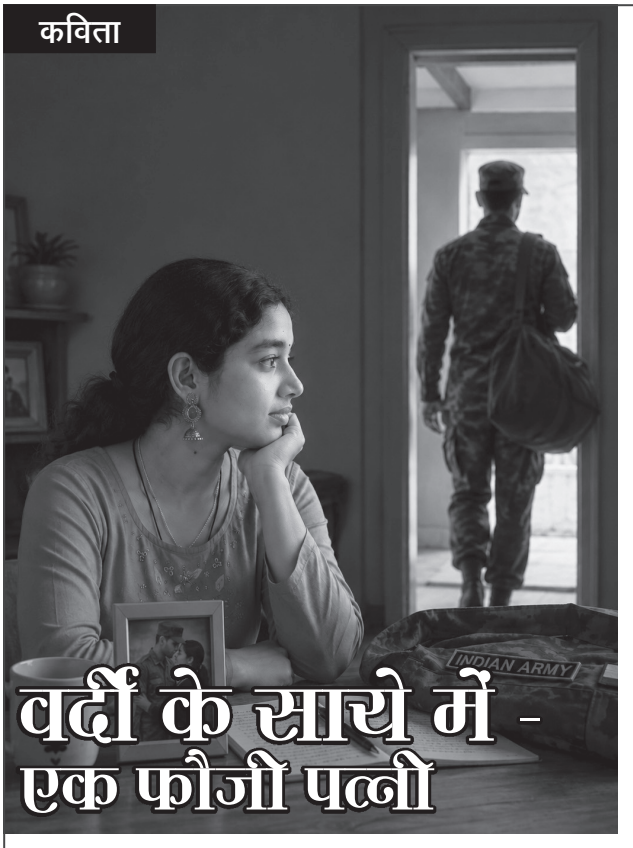

वर्दी के साये में - एक फौजी पत्नी

काव्या गोपकुमार
अनुवाद प्रशिक्षणार्थी, हिंदी अनुभाग,
रबड़ बोर्ड मुख्यालय

जब ब्याह कर आई थी फौजी से,
जानती थी, बदल जाएगा जीवन सारा।
पोस्टिंग-दर-पोस्टिंग, शहर-दर-शहर,
क्वार्टर कभी घर-सा लगा ही नहीं हमारा।

माँ-बाबूजी से दूर, गाँव की गलियाँ छूटीं,
पर उसकी बाहों में मिली दुनिया पूरी।
वर्दी के संग जीना सीखा पल-पल,
गर्व से भर उठी हर साँस अधूरी।

महफ़िलों में परिचय बस इतना मिला,
'ये हैं उनकी पत्नी - एक फौजी पत्नी।'
बातें यूनिट की, ट्रेनिंग की, अगली पोस्टिंग की,
और मेरी दुआएँ - बस उसकी सलामती।

तबादलों में बँधी, जिम्मेदारियों में उलझी,
उसके व्यस्त दिनों की मैं साँझ-सवेरी।
धीरे-धीरे खुद को ही भूल बैठी,
मैं कब 'मैं' न रही, बस 'उसकी' रह गई।

पर जब वह दूर था, घर मैंने संभाला,
उसकी खाली जगह पर हिम्मत से ताला,
अपना दर्द पीकर बच्चों को हँसाया।
आसान नहीं था यह भी इम्तिहान,
मैं भी तो हूँ एक योद्धा, बस वर्दी नहीं पहन पायी।
वर्दी के रंग में रंग गई मेरी पहचान,
उसके नाम से ही जानी गई हर जगह।
फिर एक दिन आईने ने पूछा मुझसे,
"तेरे अपने सपने कहाँ गए, बता?"

यह सवाल शिकवा नहीं था कोई,
बस नींद से जागी एक आवाज़ थी।
सोई प्रतिभा को फिर से जगाया,
प्रेम घटाए बिना, खुद को भी जगह दी।

अब मैं हँसती हूँ और खुलकर जीती हूँ,
वर्दी के संग खड़ी, पर अपनी भी हस्ती हूँ।
क्योंकि सच्ची साझेदारी वहीं बनती है,
जहाँ दो संपूर्ण लोग कंधे-से-कंधा चलते हैं।

यह कविता हर उस स्त्री के नाम,
जो वर्दी के साथ खड़ी है सुबह-शाम।
धैर्य, दृढ़ता, गौरव जिसकी पहचान,
अलग भूमिकाएँ, अलग कुर्बान,
पर हौसला एक - अटूट, महान।

आओ, सलाम करें उन चेहरों को भी,
जो पर्दे के पीछे रहकर जीतती हैं जंग।
क्योंकि हर सैनिक के पीछे खड़ी है,
एक अनदेखी, अनसुनी, अमर उमंग।

विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

रबड़ बोर्ड द्वारा विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर 10 जनवरी 2026 को जवाहर नवोदय विद्यालय, कोट्टयम में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर राजभाषा हिंदी का महत्व विषय पर व्याख्यान तथा राजभाषा प्रश्नोत्तरी का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन रबड़ बोर्ड की सहायक निदेशक (रा भा), श्रीमती एम. श्रीविद्या द्वारा किया गया। उन्होंने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए राजभाषा हिंदी की संवैधानिक स्थिति, प्रशासनिक उपयोग तथा राष्ट्र की एकता में हिंदी की भूमिका पर विस्तार से प्रकाश डाला और छात्रों को दैनिक जीवन में हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग के लिए प्रेरित किया।

जवाहर नवोदय विद्यालय, कोट्टयम की प्राचार्या श्रीमती जॉली विंसेंट ने अपने संबोधन में इस प्रकार के कार्यक्रमों के महत्व को रेखांकित किया और रबड़ बोर्ड द्वारा किए जा रहे राजभाषा संबंधी प्रयासों की सराहना की। विद्यालय की हिंदी शिक्षिका श्रीमती ज्योतिलेक्ष्मी (टीजीटी हिंदी) ने भी हिंदी भाषा की उपयोगिता और साहित्यिक महत्ता पर अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर रबड़ बोर्ड द्वारा जवाहर नवोदय विद्यालय, कोट्टयम के पुस्तकालय को हिंदी पुस्तकों का एक सेट भेंट किया गया, जिससे विद्यार्थियों में हिंदी पठन-पाठन की रुचि को बढ़ावा मिलेगा।

कार्यक्रम के दौरान विद्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका पहल का विमोचन भी किया गया, जो छात्रों की रचनात्मक प्रतिभा का परिचायक है।

कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता में भी सक्रिय सहभागिता दिखाई। कुल मिलाकर यह कार्यक्रम विश्व हिंदी दिवस के उद्देश्य के अनुरूप अत्यंत सफल एवं सार्थक रहा।

आइए हिंदी में बात करें

लंबे समय बाद मिले दो दोस्तों के बीच यह बातचीत

स्थानः एक कफे

पात्रः राहुल और अमित

राहुलः अरे! अमित? क्या यह तुम हो? विश्वास नहीं हो रहा!

अमितः (चौंककर) राहुल! भाई, कितने साल हो गए! तुम यहाँ?

राहुलः हाँ यार, मैं पिछले महीने ही मुंबई से लौटा हूँ। तुम कैसे हो? इतने दिनों से कहाँ गायब थे?

अमितः मैं बिल्कुल ठीक हूँ। बस काम के सिलसिले में बहुत व्यस्त था। तुम बताओ, क्या चल रहा है? तुम तो बिल्कुल नहीं बदले!

राहुलः वही, बस भागदौड़ भरी जिंदगी। आज फाइनली फुर्सत मिली तो इधर आ गया। याद है, कॉलेज में हम यहाँ घंटों बैठकर गपशप करते थे?

अमितः (हंसते हुए) हाँ यार, वह भी क्या दिन थे। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा कि हम 5 साल बाद मिल रहे हैं! चलो, कहीं बैठकर कॉफ़ी पीते हैं और बहुत सारी बातें करते हैं।

राहुलः बिल्कुल, मेरे पास बताने के लिए बहुत कुछ है।

अमितः (हंसते हुए) चलो, अभी के लिए चलते हैं। फिर जल्द ही प्लान बनाते हैं।

राहुलः पक्का! अब जल्दी ही मिलेंगे। अलविदा दोस्त!

अमितः अलविदा, अपना ख्याल रखना!

मुहावरे

दैनिक जीवन में प्रयोग होने वाले कुछ बहुत ही सरल और प्रचलित हिंदी मुहावरे -

1. **आखों का तारा होना** (बहुत प्यारा होना) - हर बच्चा अपनी माँ की आँखों का तारा होता है।
2. **नाक में दम करना** (बहुत परेशान करना) - इन शरारती बच्चों ने तो नाक में दम कर दिया है।
3. **पीठ थपथपाना** (शाबाशी देना) - अच्छा काम करने पर टीचर ने मेरी पीठ थपथपाई।
4. **नौ दो ग्यारह होना** (भाग जाना) - पुलिस को देखते ही चोर नौ दो ग्यारह हो गया।
5. **पेट में चूहे कूदना** (बहुत भूख लगना) - जल्दी खाना लाओ, मेरे पेट में चूहे कूद रहे हैं।
6. **काम तमाम करना** (खत्म करना या मार डालना) - बिल्ली ने चूहे का काम तमाम कर दिया।
7. **ईद का चाँद होना** (बहुत दिनों बाद दिखाई देना) - भाई! तुम तो आजकल ईद का चाँद हो गए हो।
8. **दाँतों तले उँगली दबाना** (आश्चर्यचकित होना) - जादूगर का खेल देखकर सबने दाँतों तले उँगली दबा ली।
9. **अपना उल्लू सीधा करना** (अपना मतलब निकालना) - आजकल के लोग केवल अपना उल्लू सीधा करना जानते हैं।
10. **घी के दीये जलाना** (खुशियाँ मनाना) - बेटे के नौकरी लगने पर माँ ने घी के दीये जलाए।

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 51वीं बैठक

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास) की 51वीं बठैक दिनांक 15 जनवरी 2026 को पूर्वाह्न 11.00 बजे रबड़ बोर्ड मुख्यालय, कोट्टयम के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता श्री एम. वसंतगेशन, आई.आर.एस., अध्यक्ष नराकास एवं कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड, कोट्टयम ने की। क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय, राजभाषा विभाग, कोची के उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री निर्मल कुमार दुबे उपस्थित रहे।

बैठक का प्रारंभ सदस्य सचिव श्रीमती श्रीविद्या एम द्वारा अध्यक्ष, उप निदेशक (कार्यान्वयन) एवं उपस्थित सदस्य कार्यालयों के प्रमुखों/अधिकारियों के स्वागत से हुआ। अपने अध्यक्षीय भाषण में अध्यक्ष महोदय ने हाल ही में आयोजित संसदीय समिति की बैठक का उल्लेख करते हुए नराकास बैठकों में कार्यालयाध्यक्षों की उपस्थिति के महत्व पर बल दिया। उन्होंने सुझाव दिया कि प्रत्येक वर्ष जनवरी एवं अगस्त माह में आयोजित बैठकों की तिथि पूर्व निर्धारित कर संबंधित कार्यालयों को समय रहते सूचित किया जाए, जिससे कार्यालयाध्यक्षों की उपस्थिति सुनिश्चित की जा सके।

अध्यक्ष महोदय ने यह भी अवगत कराया कि नराकास, कोट्टयम को संसदीय समिति द्वारा अच्छा प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया है तथा भविष्य में सतत प्रयासों के माध्यम से उत्कृष्ट प्रमाण-पत्र प्राप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने त्रैमासिक विशेष राजभाषा कार्यक्रम की सफलता पर संतोष व्यक्त किया गया तथा इसे आगामी तिमाहियों में भी जारी रखने का निर्णय लिया गया। अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा करते हुए उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने राजभाषा के प्रभावी प्रयोग हेतु आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया तथा विभागीय वेबसाइट पर उपलब्ध शब्द सिंधु एवं कंठस्थ जैसे उपकरणों के उपयोग पर बल दिया।

त्रैमासिक राजभाषा कार्यक्रम - कोट्टयम नराकास की पहल

नराकास, कोट्टयम की 50वीं बैठक में लिए गए निर्णय के अनुरूप यह निर्धारित किया गया था कि प्रत्येक तिमाही में सदस्य कार्यालयों द्वारा एक विशेष राजभाषा कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा।

इसी क्रम में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया द्वारा नराकास, कोट्टयम के तत्वावधान में दिनांक 30 सितंबर 2025 को चित्र देखो, स्लोगन लिखो शीर्षक से एक विशेष त्रैमासिक राजभाषा कार्यक्रम ऑनलाइन माध्यम से सफलतापूर्वक आयोजित किया गया। इस प्रतियोगिता में सदस्य कार्यालयों के पदधारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया तथा हिंदी में अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। कार्यक्रम के पुरस्कारों का वितरण दिनांक 15 जनवरी 2026 को आयोजित नराकास, कोट्टयम की 51वीं बैठक के दौरान किया गया।

इसी प्रकार, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा नराकास, कोट्टयम के तत्वावधान में एक हिंदी गीत प्रतियोगिता का आयोजन त्रैमासिक कार्यक्रम के रूप में किया गया। इस कार्यक्रम में कोट्टयम नराकास के विभिन्न सदस्य कार्यालयों के अनेक अधिकारियों ने सक्रिय भागीदारी की। भारतीय स्टेट बैंक में दिनांक 17 अक्तूबर 2025 को आयोजित एक भव्य समारोह में श्री मनोज कुमार पात्रा, उप महाप्रबंधक, स्टेट बैंक ऑफ इंडिया द्वारा पुरस्कारों का वितरण किया गया।

इसके अतिरिक्त, वर्ष के दौरान नराकास, कोट्टयम के तत्वावधान में एक करियर मार्गदर्शन संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न कॉलेजों से 44 विद्यार्थियों ने प्रतिभागिता की। कार्यक्रम का उद्घाटन श्रीमती प्रिया वर्मा, निदेशक, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान द्वारा किया गया। इस संगोष्ठी के मुख्य वक्ता श्री प्रशांत जी. पै, मुख्य प्रबंधक (राजभाषा), केनरा बकैं, एरणाकुलम रहे, जिन्होंने विद्यार्थियों को करियर संबंधी महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया।

उपरोक्त सभी कार्यक्रम राजभाषा हिंदी के प्रभावी प्रयोग को प्रोत्साहित करने, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों में सृजनात्मकता एवं जागरूकता बढ़ाने की दिशा में अत्यंत सराहनीय एवं प्रेरणादायक पहल सिद्ध हुए।

"यह एक बहुत बड़ा सच है कि अगर आप किसी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पूरे साहस और निष्ठा के साथ अपने कदम बढ़ाते हैं, तो इस दुनिया की कोई भी ताकत आपको सफल होने से नहीं रोक सकती, बस शर्त यह है कि आप अपने विचारों में पूरी तरह से स्पष्ट हों।"

-स्वामी विवेकानंद

25वाँ संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के तत्वावधान में 25वाँ संयुक्त हिंदी सप्ताह समारोह 02 फरवरी से 07 फरवरी 2026 तक रबड़ बोर्ड मुख्यालय में आयोजित किया गया। समाराहे के अंतर्गत सदस्य कार्यालयों के पदधारियों एवं उनके बच्चों के लिए विविध प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। प्रथम दिवस कविता पाठ, हिंदी गीत एवं समूह देशभक्ति गीत प्रतियोगिताएँ संपन्न हुईं। 03 फरवरी को भाषण, समाचार वाचन एवं प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई। 04 फरवरी को निबंध लेखन, टिप्पण एवं आलेखन, स्मरणशक्ति परीक्षा तथा टंकण प्रतियोगिताएँ संपन्न हुईं। 06 फरवरी को संयुक्त हिंदी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं में प्रतिभागियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर हिंदी भाषा के प्रति अपनी रुचि एवं सृजनात्मकता का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। यह आयोजन राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं प्रभावी कार्यान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण एवं सफल पहल सिद्ध हुआ।

25 वें संयुक्त हिंदी सप्ताह के अंतर्गत बच्चों की प्रतियोगिताएँ

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की कोर समिति की 25 नवम्बर 2025 को आयोजित बैठक में लिए गए निर्णय के अनुसार 25वें संयुक्त हिंदी सप्ताह समाराहे के अंतर्गत सदस्य कार्यालयों के पदधारियों के बच्चों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। ये प्रतियोगिताएँ 07 फरवरी 2026 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय में संपन्न हुईं।

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः पंजीकरण से हुआ। तत्पश्चात सुलेख, स्मरणशक्ति परीक्षा, श्रुतलेख, कविता पाठ, कहानी सुनाना, भाषण, हिंदी गीत, प्रश्नोत्तरी तथा देशभक्ति गीत जैसी प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं। प्रतियोगिताएँ कक्षा 1 से 12 तक के विद्यार्थियों को चार वर्गों में विभाजित कर संपन्न कराई गईं।

बच्चों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास एवं हिंदी भाषा के प्रति रुचि का प्रभावशाली प्रदर्शन किया। सदस्य कार्यालयों द्वारा भी सक्रिय सहयोग प्रदान किया गया। यह आयोजन राजभाषा के प्रचार-प्रसार एवं नई पीढ़ी में हिंदी के प्रति जागरूकता बढ़ाने की दिशा में एक सार्थक एवं सफल प्रयास सिद्ध हुआ।

संयुक्त हिंदी कार्यशाला

06 फरवरी 2026 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय, कोट्टयम में प्रातः 10:00 बजे से 12:30 बजे तक सदस्य कार्यालयों के पदधारियों के लिए संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।

कार्यशाला के मुख्य वक्ता श्री षोजो लोबो, वरिष्ठ राजभाषा अधिकारी, केनरा बैंक, तिरुवनंतपुरम थे। उन्होंने राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन, कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग तथा व्यवहारिक चुनौतियों एवं उनके समाधान पर विस्तृत मार्गदर्शन प्रदान किया। उनके व्याख्यान ने प्रतिभागियों को राजभाषा के प्रयोग के प्रति प्रेरित एवं जागरूक किया।

कार्यशाला में विभिन्न सदस्य कार्यालयों से कुल 48 पदधारियों ने सहभागिता की। प्रतिभागियों ने सक्रिय रूप से चर्चा में भाग लिया तथा अपने अनुभव साझा किए।

यह कार्यशाला राजभाषा के प्रोत्साहन एवं कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रभावी उपयोग की दिशा में एक सार्थक एवं सफल प्रयास सिद्ध हुआ।

दैनिक उपयोगी हिंदी-अंग्रेजी वाक्यांश

मुझे सोना है	I have to sleep.
मैं सो रहा हूँ	I am sleeping.
मुझे थकान महसूस हो रही है	I Feel tired.
क्या तुम थके हुए हो?	Are you tired?
मुझे रात का खाना खाना है	I have to eat dinner.
मैं रात का खाना खा रहा हूँ	I am eating dinner.
मुझे ब्रश करना है	I have to brush my teeth.
मैं ब्रश कर रहा हूँ	I am brushing my teeth.
मुझे नहाना है	I have to take a bath.
मैं नहा रहा हूँ	I am bathing.
क्या तुम नहा रहे हो?	Are you bathing?
मुझे किताब पढ़नी है	I have to read a book.
मैं किताब पढ़ रहा हूँ	I am reading a book.
क्या तुम किताब पढ़ रहे हो?	Are you reading a book?
मुझे टीवी देखना है	I have to watch TV.
मैं टीवी देख रहा हूँ	I am watching TV.
मैं मोबाइल चला रहा हूँ	I am using my phone.
क्या तुम मोबाइल चला रहे हो?	Are you using you phone?
मैं अलार्म लगा रहा हूँ	I am setting the alarm.
मुझे खिड़की बंद करनी है	I have to close the window.
मैं खिड़की बंद कर रहा हूँ	I am closing the window.
मुझे दरवाज़ा बंद करना है	I have to close the door.
मैं दरवाज़ा बंद कर रहा हूँ	I am closing the door
शुभ रात्रि	Good Night!

रसोई घर

आलू पराठा

सामाग्री :

आटे के लिए

2 कप साबुत गेहूं का आटा
1 छोटा चम्मच नमक
1/2 छोटा चम्मच अजवाइन
1 बड़ा चम्मच घी
आवश्यकतानुसार पानी
2 छोटे चम्मच तेल

भरने के लिए -

दो बड़े आलू, उबले और कद्दूकस किए हुए
1 इंच अदरक, कद्दूकस किया हुआ
2-3 हरी मिर्च, बारीक कटी हुई
1 बड़ा चम्मच ताजा धनिया पत्ती
नमक स्वाद अनुसार
1/2 छोटा चम्मच धनिया पाउडर
1 छोटा चम्मच मिर्च पाउडर
1/2 छोटा चम्मच जीरा पाउडर
1 छोटा चम्मच गरम मसाला
1/2 छोटा चम्मच सूखी मेथी के पत्ते
1/4 छोटा चम्मच सूखा आम पाउडर
भूनने के लिए घी
सजावट के लिए मक्खन के टुकड़े
परोसने के लिए दही
परोसने के लिए अचार

प्रक्रिया :

एक कटोरे में गेहूं का आटा, बेसन और घी डालें। अच्छी तरह मिलाएँ और दानेदार मिश्रण बना लें। आवश्यकतानुसार पानी डालकर नरम आटा गूंथ लें। इसे मलमल के कपड़े से ढककर 20 मिनट के लिए या उपयोग करने तक अलग रख दें। आटे में तेल डालकर तब तक गूंधें जब तक वह तेल में पूरी तरह समा न जाए। उबले हुए आलू, प्याज, हरी मिर्च, ताजा हरा धनिया, नमक, धनिया पाउडर, मिर्च पाउडर, जीरा पाउडर, गरम मसाला, सूखी मेथी के पत्ते, सूखा आम पाउडर डालें और अच्छी तरह मिला लें। तैयार किए गए आटे को बराबर भागों में बांट लें और नींबू के आकार की छोटी-छोटी लोइयां बना लें। इन्हें बेलन से बेलकर चपटी डिस्क बना लें और बीच में तैयार भरावन डाल दें। आटे को पोटली की तरह बेल लें, अतिरिक्त आटा हटा दें और फिर से डिस्क के आकार में बेल लें।

तवा गरम करें, तैयार पराठा डालें और दोनों तरफ 30 सेकंड के लिए सेकें। पलटकर घी लगाएँ। फिर से पलटकर तब तक सेकें जब तक उस पर भूरे धब्बे न दिखने लगें। मक्खन के टुकड़ों से सजाएँ। दही और अचार के साथ गरमागरम परोसें।

सेवानिवृत्तियां 2025-2026

अक्टूबर 2025

साजू पी एम
शिफ्ट सूपरवाइजर

नवंबर 2025

स्वपन चंद्र देबनाथ
विकास अधिकारी

खोखन देबनाथ
स्टाफ कार चालक

दिसंबर 2025

ए डी टोणी
विकास अधिकारी

षेरा मात्यु
वैज्ञानिक सी

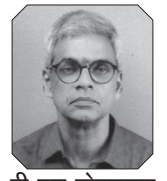

पी एस गोपकुमार
अनुभाग अधिकारी

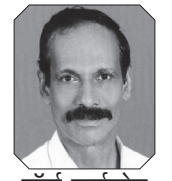

जॉर्ज कुर्याकोस
अनुभाग अधिकारी

दिसंबर 2025

अतुल मेधी
फील्डमैन

जनवरी 2026

बिजॉय गोपाल कारमाकर
उप निदेशक

राजू के टी
विकास अधिकारी

जेइम्स वी सी
विकास अधिकारी

शंकरी कर चौधरी
विकास अधिकारी

मधुसूदनन के एम
सहायक सचिव

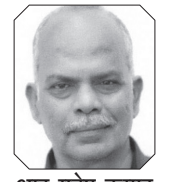

आर महेष कुमार
संपदा अधिकारी

जनवरी 2026

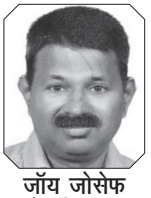

जॉय जोसेफ
वैज्ञानिक डी

डॉ टी मीनाकुमारी
वैज्ञानिक सी

भास्वती चक्रबर्ती
अनुभाग अधिकारी

सुरेश चंद्र साहू
सहायक

सुमेश देबबर्मा
कनिष्ठ फार्म अधिकारी

विश्वजीत सरकार
इलेक्ट्रिशियन

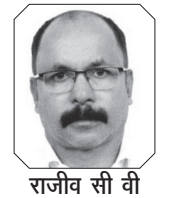

राजीव सी वी
स्टाफ कार चालक

जनवरी 2026

उत्तम कुमार दास
स्टाफ कार चालक

फरवरी 2026

भुवन चंद्र बोरा
अनुभाग अधिकारीं

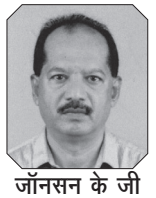

जॉनसन के जी
उ रबड़ उत्पादन आयुक्त

जूसी पी जॉर्ज
विकास अधिकारी

ओमना सी आर
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

पी बाबु
कनिष्ठ प्रक्षेत्र अधिकारी

पार्वती टी
अनुभाग अधिकारी

फरवरी 2026

संतोष पंतट्टी
वरिष्ठ फील्डमैन

सुजाता टी जी
सहायक सचिव

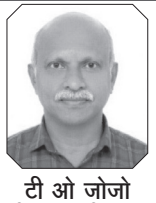

टी ओ जोजो
विकास अधिकारी

विनोब बाबु टी पी
विकास अधिकारी

मार्च 2026

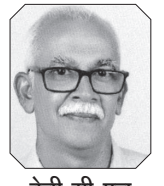

बेन्नी सी एल
सहायक प्रक्षेत्र प्रबंधक

ई पी सजिकुमार
कनिष्ठ प्रक्षेत्र अधिकारी,

मधुसूदनना पी के
सहायक

मार्च 2026

मोहबत अली लस्कर
वरिष्ठ फील्डमैन

साजन टी बी
फील्ड अटेंडर

षैला टी एम
लाईब्रेरी अटेंडेंट

सूसी पी पी
सहायक

सुरेश पी बी
विकास अधिकारी

श्यामला टी ए
अनुभाग अधिकारी

हिंदी दिवस समारोह

आंचलिक कार्यालय मैंगलूर में 25 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती के कविता, हिंदी अध्यापिका, सरकारी पी यू कॉलेज (हाई स्कूल दस्ता), बालमट्टा, मैगलूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती जयमोल सी एल, संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त (प्रभारी) ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती मिनी नैनान, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त (प्रभारी) ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - संजय के जी, युवा पेशेवर

द्वितीय - होजिरे मंगला सबप्पा, अनुभाग अधिकारी

तृतीय - सुजाता सी डिसूसा, क. सहायक ग्रेड 1

II. कवितापाठ

प्रथम - सुजाता सी डिसूसा, क. सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - मिनी नैनान, उप र उ आयुक्त (प्रभारी)

तृतीय - दीप्ती दास पी, स.विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय तोडुपुषा में 19 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मंजु के एम, हिंदी अध्यापिका प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती मेरिकुट्टी बेबी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री विनोब बाबु टी पी, सहायक विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कुमारी दावुलुरी नेहा, क्षेत्रीय अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - बिबिन वी बी, क. सहायक

द्वितीय - प्रीता पी, सहायक

तृतीय - दावुलुरी नेहा, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - दावुलुरी नेहा, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - प्रीता पी, सहायक

तृतीय - सुरजीत माघी, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय जोरहट में 25 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती रूपा रानी देवी, हिंदी अध्यापिका, सरकारी बोय्स हाई स्कूल, जोरहट प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती जेस्सी ई एस, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त और निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्री देब कृष्ण सैकिया, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता

कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन
श्री/श्रीमती
प्रथम - देब कृष्ण सैकिया, स. विकास अधिकारी
द्वितीय - के सी सुबाष, सहायक
तृतीय - विवेकानंद बेहरा, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ
प्रथम - ज्योतिसमान गोस्वामी, युवा पेशेवर
द्वितीय - हिफजुल होक, स.विकास अधिकारी
तृतीय - भुबन चंद्र बोरा, अनुभाग अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय सिलचर में 26 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती आषिमा देवी, हिंदी अध्यापिका, सरला बिरला ज्ञानज्योति अकादमी, सिलचर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन
श्री/श्रीमती
प्रथम - योगेष कश्यप, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय -अजय कुमार, सिरोहिया, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - बंदना सिंह, युवा पेशेवर

II. निबंध लेखन
श्री/श्रीमती
प्रथम - योगेष कश्यप, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय -नारायण चंद्र दास, सर्वेक्षण अधिकारी
तृतीय - अजय कुमार, सिरोहिया, क्षेत्रीय अधिकारी

III. कवितापाठ
प्रथम - बंदना सिंह, युवा पेशेवर
द्वितीय - जिजी पी जोण, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - देबाशिष नाथ, सहायक

IV. भाषण
प्रथम - योगेष कश्यप, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय -बंदना सिंह, युवा पेशेवर
तृतीय - अजय कुमार, सिरोहिया, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय पुत्तूर में 26 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। डॉ. बी लता, व्याख्याता, सेंट फिलोमिना कॉलेज, पुत्तूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री गोपकुमार ए, विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन
श्री/श्रीमती
प्रथम - निरेन शेट्टी, युवा पेशेवर
द्वितीय - माया एल, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - एन पवित्रा, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - एन पवित्रा, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - निरेन शेट्टी, युवा पेशेवर
तृतीय - चैत्रा बी एस, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय पालक्काड में 26 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती जयश्री एन, टीजीटी, पालक्कड लायंस स्कूल, पालक्काड प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री मधु सी बी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री ए डी टोना, विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्रीमती गीता पी, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

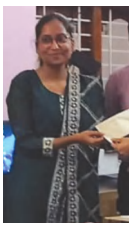

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती
प्रथम - षीजा ई, अनुभाग एधिकारी
द्वितीय - मोहनदास के वी, क.सहायक ग्रेड 1
तृतीय - सेतु के, परिचारक

II. कवितापाठ

प्रथम - षीजा ई, अनुभाग एधिकारी
द्वितीय - सुकुमारन पी, प्रक्षेत्र अधिकारी
तृतीय - मोहनदास के वी, क.सहायक ग्रेड 1

III. भाषण

प्रथम - सुकुमारन पी, प्रक्षेत्र अधिकारी
द्वितीय - मनीषा कुमारी, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - गीता पी, सहायक विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय दिमापुर में 26 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती रुमा चक्रवर्ती, हिंदी अध्यापिका, एम जी एम एच एस एस, दिमापुर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री कुरुविला चेरियान, विकास अधिकारी ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री कितोहोली जिमो, सहायक विकास अधिकारी ने स्वागत भाषण किया। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती
प्रथम - बिप्लब रॉय, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय -कितोहोली जिमो, सहायक विकास अधिकारी
तृतीय - अमर बोरो, सहायक विकास अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - बिप्लब रॉय, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - सांचोबेनी, युवा पेशेवर
तृतीय - अमर बोरो, सहायक विकास अधिकारी

III. भाषण

प्रथम - कुरुविला चेरियान, विकास अधिकारी
द्वितीय - बिप्लब रॉय, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - सांचोबेनी, युवा पेशेवर

प्रादेशिक कार्यालय कुंदापुरा में 25 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री विट्ठल, हिंदी अध्यापक, सरकारी हाई स्कूल, वादरहोबाली, कुंदापुरा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती जूसी पी जोर्ज, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त और निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्री महेंद्र पुंडलिक पथारे, अनुभाग अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

II. कवितापाठ

प्रथम - सी एच गणेश, अभिलेखपाल
द्वितीय -महेंद्र पुंडलिक पथारे, अनुभाग अधिकारी
तृतीय - तुनजा, युवा पेशेवर

प्रादेशिक कार्यालय मण्णार्क्काड में 30 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री जाफर ए, हिंदी अध्यापक, एच एस टी (हिंदी), ए एम हायर सेकेंडरी स्कूल, वेंगूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्रीमती प्रेमलता वी पी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। डॉ.प्रिया पी बी, सहायक विकास अधिकारी आयुक्त ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I. टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती
प्रथम - डॉ.प्रिया पी बी, सहायक विकास अधिकारी
द्वितीय - के बी सुमती, क. सहायक ग्रेड 1
तृतीय - बलकीस शाफी, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - बलकीस शाफी, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - के बी सुमती, क. सहायक ग्रेड 1
तृतीय - विजय एम, क्षेत्रीय अधिकारी

"सफलता हमेशा असफलता के स्तंभ पर खड़ी होती है, इसलिए किसी को भी अपनी असफलताओं से घबराना नहीं चाहिए, क्योंकि जो लोग बाधाओं को देखकर मचलते हैं उन्हें कांटे भी जल्दी चुभते हैं और याद रखिए कि सबसे बड़ा अपराध अन्याय सहना व गलत के साथ समझौता करना है।"

-सुभाष चंद्र बोस

अर्थशास्त्र नोबेल पुरस्कार

विलियम एफ. शार्प

पुरसकार वर्ष : 1990
जन्म : 16 जून, 1934
राष्ट्रीयता : अमरीकी

1990 का अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कारप्राप्त करने वाले ये तीसरे व्यक्ति थे। इन्होंने निवेश सिद्धातं और कैपिटल मार्केट सिद्धांत पर विशेष कार्य किया। इन्होंने मूल्य निर्धारण सिद्धांत को विकसित किया।

राबर्ट डब्ल्यू फोगल

पुरस्कार वर्ष : 1993
जन्म : 1 जुलाई, 1926
मृत्यु : 11 जून, 2013
राष्ट्रीयता : अमरीकी

राबर्ट फोगल को 1993 का अर्थशास्त्र में नोबेल पुरस्कार दिया गया। इस समय वे सड़सठ वर्ष के थे। पुरस्कार में इनके दूसरे साथी थे नार्थ। राबर्ट फोगल ने पुरानी आर्थिक मान्यताओं को चुनौती दी है। इन्होंने अमरीकी आर्थिक विषयों पर कुछ पुस्तकें लिखी हैं। 1974 में लिखी पुस्तक काफी विवादास्पद रही- जिसमें उन्होंने लिखा है कि गृह युद्ध से पूर्व दासता आर्थिक दृष्टिकोण से सही थी- इसका कारण यह नहीं कि वे गुलाम प्रथा के समर्थक हैं।

रोनाल्ड कोसे

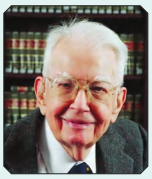

पुरसकार वर्ष : 1991
जन्म : 29 दिसंबर, 1910
मृत्यु : 2 सितंबर, 2013
राष्ट्रीयता : ब्रिटिश/अमरीकी

इन्होंने लन्दन के स्कूल आफ इकनामिक्स में प्रशिक्षण प्राप्त किया और ये अमरीका के शिकागो विश्वविद्यालय में प्रतिष्ठित प्राध्यापक हैं। इन्होंने ट्रांजैक्शन (कार्य सम्पादन) कॉसट तथा संस्थागत कम्पनियों के अधिकारों और अर्थव्यवस्था के कार्य-व्यवहार पर कार्य किया। 1991 का पुरस्कार इन्हें दिया गया।

गैरी एस. बेकर

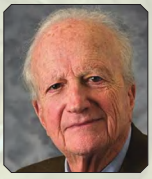

पुरसकार वर्ष : 1992
जन्म : 2 दिसंबर, 1930
मृत्यु : 3 मई, 2014
राष्ट्रीयता : अमरीकी

मि. बेकर अमरीकन हैं और इन्हें 1992 का अर्थशास्त्र से संबंधित नोबेल पुरस्कार दिया गया। ये शिकागो विश्वविद्यालय से संबंधित है। इनका कहना है कि आर्थिक सिद्धातों का उपयोग उन क्षेत्रों में किया जाना चाहिए जिनका संबंध बाजार से है- यथा समाज विज्ञान, जनसंख्या से संबंधित और अपराध विज्ञान आदि। उन्होंने बताया कि किस प्रकार परिवार, संस्थाएं और लोग अपने प्रतिदिन के निर्णयों में किस प्रकार आर्थिक सिद्धातों का उपयोग करते हैं।

हैरी मैक्स मार्कोविज़

पुरस्कार वर्ष : 1990
जन्म : 24 अगस्त, 1927
मृत्यु : 22 जून, 2023
राष्ट्रीयता : अमरीकी

1990 का अर्थशास्त्र संबंधी पुरस्कार हैरी मार्कोविज़ सहित तीन अमरीकियों को दिया गया। इन्हें मार्टन एच. मिलर और विलियम शार्प के साथ पुरस्कार दिया गया। इन्होंने निवेश विकल्प सिद्धातं पर कार्य किया।

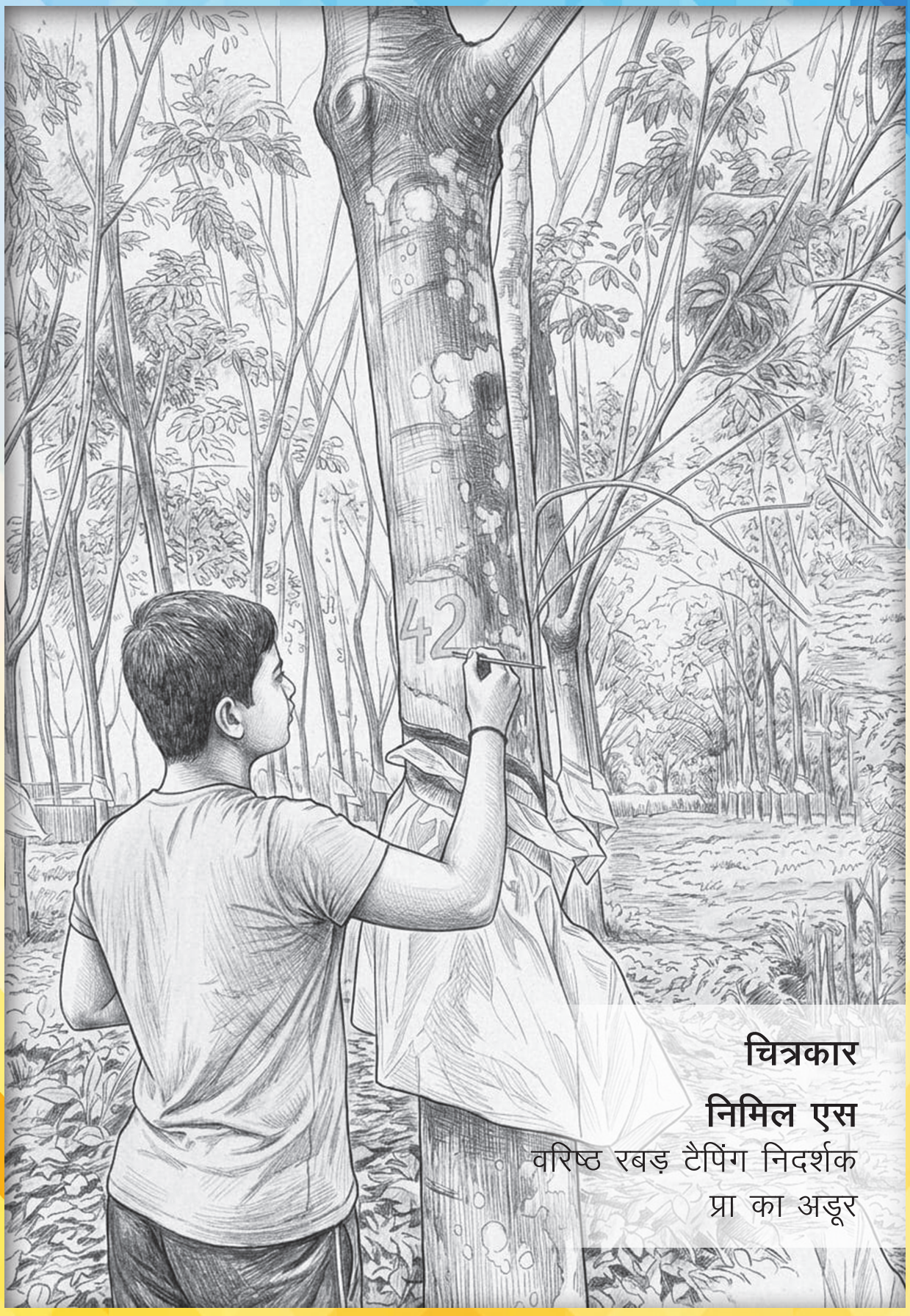

चित्रकार

निमिल एस

वरिष्ठ रबड़ टैपिंग निदर्शक

प्रा का अडूर

Penta Offset, KTM. 94472 59201